

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पद लिप्यते ॥ रागने
 रूतालचौतालौ ॥ उमहोगनपतदेहोबुधद
 ताधरैसीसगजुंम ॥ सिद्धश्रीनां वतिहा
 रोधरीथै जितही विद्याधर सपतही पनवष
 म ॥ १ ॥ संसकृत नुरिंध्र सिधालीथै चंदन
 लेपाकीथै जुजमंम ॥ तानसेन प्रकतुमही
 कोंध्रावत काहासककहापिमं ॥ २ ॥ रागने
 रू ॥ मोसोजो अवधबदगयेसांरुकी पियअ
 थिनारनये ॥ ऐसीको नचनुरनार जितुम
 विरमाथै ऐसीसकवहये ॥ ३ ॥ अधरन अंजन
 पीकलीकलागे नुरनयचेतनये ॥ धोंधीकेष
 जुंमवोहोनायककीनेनेहनये ॥ ४ ॥ दैयोदे
 वोसधिहो अपियनसकवहेत होऊजनां ॥ बिद्यु
 रीअलकपीकपलकअंरुत अधरमंम तगंम
 सिथल गनुरसांवरेतनां ॥ ५ ॥ नवलनऊज
 ऊसमडुंजरचतसेजमैनेके नकलितही
 कअंगअमजलकनां ॥ ६ ॥ अरनचक
 तनेनचाहत विलकवलनेततालातेताला ॥ प
 हतदासहासीजनां ॥ ७ ॥ ललितत्रिगंगीवि
 लौ ॥ इनसोतनकेमाईरी ॥ ८ ॥ कहिधौऊ
 कृदेवननपाऊ ॥ विसगरी ॥ सिधयेइनहकहाके ॥
 हेरीअरीरुतोकबकुकबे ॥ ९ ॥ विहारी ॥ पियशानन
 क ॥ १० ॥ प्रिरोधरधरधेरोकरल

ककीईकनचलाक ॥ राजारामके आगेब
 दन्वतीरागरंगकररिमाक ॥ २॥ १॥ ताल
 इकतालो ॥ बनबनवारीहोषेवतमोलत
 गायनकेसंगधोरीधूमरकारीकाजरति
 नकौनांमलैलेरगरंग ॥ १॥ प्रियेपियाचदसौ
 उजियारो ॥ घरीघरीपलठिनकलनपरतहे
 नैकनकीज मारो ॥ २॥ ५॥ रागनेरूताल
 असवारी ॥ मासूडाजीमहांनैआवेठैहोनीदमा
 सूडाजीमहांनैआवेठै ॥ म्हेतोथांरीदासीसाबाज
 नमजनमरी ॥ पोदडीनैआणजगावेठै ॥ ६॥ राग
 नेरूतालअसवारी ॥ नीकीलागेठैमहांनैआंन
 हेसांवलाजीथांरीनीकीलागेठैमहांनैआंन ॥
 कबकीमैठाठीठाठीअरजकरांवां ॥ तनधनक
 रांऊरबांन ॥ ७॥ रागविन्नासतालडुतालो ॥
 गहोमनसबरसकौरससार ॥ लोकनेदकउव
 महीतजीये ॥ चजीयेनितबिहार ॥ १॥ यहकाप
 तिनपति ॥

ज्योसेवोसांमउदार ॥ कहे
 मना ॥ रांमनांमउरधार ॥ २॥
 उतितालो ॥ बामोगरबई
 अंगनां ॥ तारनकीजोतबुटी
 ॥ मुखकीतंबोलफीकीनैनका
 रागविन्नासतालडुतालो ॥
 उठवैवे ॥ असपरमहेऊकर

तसिं गार ॥ जनपहरीवाकीमोतनमावा ॥ जनेप
 हस्योवाकोतवसरहार ॥ १ ॥ लटपटपेचसवारत
 स्यांमा ॥ अलकसवारतनं हकमार ॥ जेश्वानव
 जुगलवाकीजोरी ॥ मेरैरीआंगनकरतविहार
 ॥ २ ॥ १ ॥ रागविनासतालडतालौ ॥ दीलीदीली
 मगनरोदीलीपागटरकरही ॥ फहसेपरतऐसी
 कोनपरफहहौ ॥ गढिजौ हीयाकेपिय ऐसीगड
 कांनविया ॥ गढिगढिनोजनसोंगढिकरगहहौ
 ॥ १ ॥ लालनलोयनउतंहिलागलागजातासांची
 कहेरसकप्यारेमैतोलालनहहौ ॥ रसवरसात
 अलसातसगुचगतव्याएशातकहोवातरात
 कहांरहेहौ ॥ २ ॥ १ ॥ रागविनासतालडतालौ ॥
 कंचुकीकसतरकतरकडुटतदिषतमदनमो
 हनधनस्याम ॥ मोसोकहाडुरावकरतहौ ॥ उमगत
 उरजडरतकेआंम ॥ १ ॥ बदनकवनपरअल
 कावलमांनो ॥ वजनमधुपलितविश्यांम ॥ कस
 हासप्रलुगिरधरनागरथाहीनांतलजावत
 कांम ॥ २ ॥ १ ॥ रागललिततालतितालौ ॥ प
 रीतेरेनैतारीअतिवांके ॥ टेर ॥ ललितत्रिनंगीवि
 हारीनागरातेअपनेकरआंके ॥ १ ॥ कहिधौऊ
 वरिकिशोरीकोकगुन ॥ सिषयेइतहकहांके ॥
 श्रीविठलविठुलवितोदुविहारी ॥ पियप्रांनन
 मिठांके ॥ २ ॥ १ ॥ रागलकडिसल्लफतितालौ ॥

॥टि॥

पानी तेरे नैतति पर वित दू टला नां लो जइ कली
 रन वरा हित अतु तर स घु टत ॥१॥ क हारी कहे
 इत नैत वं तसे। इत लाग त र त फु टत ॥ श्री वि
 ल वि ड क वि ते ड वि हारी। पिय को सर व स घु टत
 ॥२॥ १५ ॥ राग जदि न ता जदि ता लो ॥ प्यारी इत
 काजर कृ तै कारी ॥ तां तौ न वर उ म त है ब रा ब
 र ॥ टि॥ चं पे की सी मार बै टे अ खि जं ट ही। जा ग
 ज ब डी अर अर ॥१॥ ज ब डी अं त घिर त क ट क क
 म को ॥ त व जिय हो त म रा मर ॥ श्री हरि रा त के स
 मी स्या मा क ज वि हारी ॥ दो उ मि ज ल र त म रा मर
 ॥२॥ १५ ॥ राग जदि न ता जदि ता लो ॥ उ ती धी
 अं धै रं म नरी ॥ वर मारो ल ष को ट ॥ टि॥ चं च ल
 च प ल सुरं ग ल बी लो ॥ आं त व तौ म ग जो टा ॥१॥
 डुर त सुर त म प क त अ तिय रि त्वं च ल कर त है
 चो ट ॥ च ड र वि हारी प्यारी की ड वि नि र ष त ॥ च
 थ त सु ष क शि ट ॥२॥ १५ ॥ राग जदि न ता जदि ता
 लो ॥ न दि अ ए गि र व र धारी हो ता मर ॥
 टि॥ जिय की कृ पा ज ब डी में जां ती ॥ जो र डु ली
 इ हें आ ग र ॥१॥

॥२॥ १६ ॥ राग जदि न ता जदि ता लो ॥

जित ता लो ॥ कां ई हु ठ ना गा डो वा ल म
 रा ज ॥ टि॥ पा य व व जै मू री त ल छ व जा गै ॥ म

फ करै माहाराज ॥ ११ ॥ राग ललित ताल त्रि
 तालौ ॥ प्यारी जी म्हां स्तू स्तू सर ह्यो कौ कौ काज
 ॥ टेर ॥ अमलारा राता माता म्हां रै म्हे जां आय
 ॥ सुफल नयौ सब काज ॥ ११ ॥ राग देवग
 धार ताल त्रि त्रामौ चैता लौ ॥ तन कडु मचित
 वे मेरी और ॥ टेर ॥ हम चित वत तुम चित वत
 कहां कर मकी पोर ॥ ११ ॥ मैं पिया जी कूं थो व
 सिकरि कूं ॥ सुगुणिय नव सिमोरा ॥ अनंद ध
 न पिया निस दिन चित वत ॥ चित वत होइ ग
 वि नो रै ॥ २० ॥ राग देवगंधार ताल त्रि त्रामौ चैता
 लौ ॥ दिवो इ न लो गत ही की बां नी ॥ टेर ॥ अत न
 ही हरि चरन नक्क ॥ मिथ्या जनम गुमां नी ॥ ११ ॥ ज
 व जम इत आयि घेरन क्क ॥ करत आप मुन मां
 नी ॥ कहै श्री हरि एस स म फि म न ॥ निस दिन य
 हु गुन गावनी ॥ २१ ॥ राग देवगंधार ताल त्रि त्रामौ चैता
 लौ ॥ तै रौ मघ जो वत ॥ ताल विहारी ॥
 ॥ टेर ॥ तै रौ समाज अज दिन बूटत ॥ चाहत नां
 हिं हारी ॥ ११ ॥ औ चक आय होऊ कर सं मुधा ॥
 से न न देत विहारी ॥ श्री हरि दास के स्वामी स्
 मा ॥ ऊं ज विहारी की लेत नों बावर उवारी ॥ २१ ॥
 २२ ॥ राग षट ताल चल त लौ ॥ कृतौ थां पर ऊ
 री उवारी उवारी हो विहारी जी ॥ मृदु सुसकन
 पर ऊ ई व विहारी जी ॥ टेर ॥ लाज न त

री लैरां लागी बाला ॥ थिकाई उरधारी हो विहारी जी ॥
 ॥१॥ और तरे म तजं लो हो विहारी जी ॥ लाघां वा
 ताप्यारी हो सांधारी हो गिरधारी जी ॥ वृजनिध
 अरज सुणो जी हमारी ॥ उम मोहन हम
 प्यारी हो विहारी जी ॥ २॥ २३ ॥ राग भट ताल चल
 त तिता लो ॥ वांकी ही नो हन पघीयां वांकी ॥ वां
 के चित वन नै नां वांके ॥ टेर ॥ मैत हानै न निसै
 न हई नुना ॥ नटन सषी कृनां करी हांकी ॥ २॥ २४ ॥ फर
 पिकं पिव चिजै कृनिकसी ॥ वाट गृही वरसां ता
 थांकी ॥ हरि प्रसाद प्रभु बेल लघरकी ॥
 का विध प्रातर है गीटांकी ॥ २॥ २५ ॥ राग वि
 ला उल ताल इक तालो ॥ दिषो माई कवर वमो
 दसरथको ॥ टेर ॥ जरक सी पाघ जरा वतिलां ॥
 जांमो वमो जरकसको ॥ २॥ २६ ॥ जर मोतनकी पा
 लम तोहर ॥ हाथ फूल नरगसको ॥ जन उल
 डी कै ए ही मन मांमो ॥ मुख मोस्यो मन मथको
 ॥ २॥ २७ ॥ राग विला उल ताल इक तालो ॥ कां
 नतेरी सुरली नै क वजाऊ ॥ एसा जो ही जो ही तांन
 सुनू तेरे मुखकी ॥ सोही सोही गाय सुनाऊ
 ॥ २॥ २८ ॥ यहै सुषसनका हिक कोंडर लन ॥ विष्णु
 पारनपांका ॥ सुरदास प्रभु तिहारी कृपाते ॥ ति
 रष नैन सुषपाऊ ॥ २॥ २९ ॥ राग विला उलता
 ल चल तिता लो ॥ हो में मा प्रांन बंसी वाला ॥

मोरपषांघमुकटसोहंदा। गरगुंजुंटीमात्ना ॥ १ ॥
 विद्युरीअनकसकनफगुधरासी। जरदुपदा
 वात्ना। सुरदासप्रभुतिहारीकृपातै। संतन
 दाखवात्ना ॥ २ ॥ २७ ॥ रागविजाउलताल
 चौतालौ ॥ जानामेआजादुमिनीप्यरिस्ना ॥
 तैअपनौमननांवतौरीआलीकीयौ ॥ टेर ॥
 रसकसजांतलाफलौलनतै ॥ अनतक
 जांततहीयौ ॥ २ ॥ मोसोकहाडुरावकरतहो
 ॥ डुरतनडुलकतहीयौ ॥ कुमनदासप्रभ
 गिरधरपियको ॥ अधरसुधारसपथौ ॥
 २ ॥ २८ ॥ रागविजाउलतालअसवारी ॥ अब
 धरकैसैजाकुमेरीनईया ॥ अनघटकाटौहै
 रीकनईया ॥ टेर ॥ काककौहारमोरफपटतहो ॥
 संकनसांततरईया ॥ २ ॥ कबककहसतबे
 लतउरकनसंग ॥ विचविचकुरलीसबदसु
 नईया ॥ दासजननहरषतप्रफुलतमना ॥ नि
 रषनेनसुषईया ॥ २ ॥ २९ ॥ रागविजावल
 दअसवारी ॥ आनंदवधावनीवधाव
 ॥ जोमिलेआजमिरेहोसुरजंतवांग ॥ टेर ॥ मो

तनवौकप्रावौसषामिला॥आनंदमंगलगा
वनौ॥१॥घुरतनिशाननगरानापता॥बंदन
मात्रवधावनौ॥स्वरदासप्रभुतिहारीकृपाते
निरषनैनसुषपावनौ॥२॥३॥रागविलाज
जतालधूमितितालौ॥आजहरिरैनजनी
दिआए॥विश्वप्रजनअधरलिलाटमहावर
नैनतंबोलरचाए॥१॥दसनदागनषरेषव
नीहै॥बंदनकहांलगाए॥सिधउदेहसिर
पाघलटपटी॥चुकीचंदनलाए॥२॥वि
नगुनमात्रविराजतउरपर॥कंकनपीठ
गनाए॥स्वरदासप्रभुयेहीअचंनौ॥त्रिय
तिलककहांपाए॥३॥रागविलाजजताल
जलहतितालौ॥मिरेपतरघुवरराजकंवा
र॥ठेरजरकसीपाघकेसरीवैवागै॥गलनु
कतावलहार॥१॥नक्तनजननकनस
क॥लीनाननतअपार॥स्वरदासकरजोर
कहतहै॥यहेनांमनिजसारा॥२॥३॥रा
गविलाजजतालचलतितालौ॥दिलीमां
रौसांवरौदिलदामित॥४॥फषसागरअध

हरकरत है निस दिन रहत निचंत ॥ १॥
३३ ॥ राग विलाजल चलत तिता लौ ॥ मु
जरौ लीजो हो निजर मरो बंधी मुजरौ लीजो
गिरामि तौ धारा चाकर जनम जनम रा ॥ क
डक पटम तकी जौ ॥ १ ॥ ३४ ॥ राग विलाजल
ताल चलत तिता लौ ॥ जलज मना कौ कन
इया मोहिनर न देखै जलज मना कौ कन इया ॥
टेरा ॥ मेरे तौ संग की हर निकस गड़ी धरम धजे
बे मेरी मइया ॥ १ ॥ ३५ ॥ राग विलाजल सर परछ
ताल चलत तिता लौ ॥ मोपे पट मास्यो टोना
स्यां मसलो ना ॥ टेरा ॥ निनां विधले री मेरी आ
ली ॥ म्पुषियन विचपां ना ॥ १ ॥ ३६ ॥ राग वि
लाजल ताल इकता लौ ॥ प्रिया पीतांबर सु
र लीजी ती ॥ टेरा ॥ हा हा करत न देखे तना इली ॥
चरन लुटत निसबी ती ॥ १ ॥ राधा याही उरो
थ सबी ललि ताहिकर हो सबी ती ॥ श्री विठ
ल विठुल विनोद विहारन ॥ प्रगट करतर स्
री ती ॥ २ ॥ ३७ ॥ राग विलाजल ताल जल
दतितालौ ॥ धन धरी धन नाग हमारौ ह

जीकोहरसकरैमनमेरे॥टेर॥नक्तवबल
नक्तनसुषदायक॥रषियेचरनकवल
सांनेरो॥१॥सेवासमरणकबुनहिजां
ब्यातिरोहीविरदविचिरो॥दासजननकर
जोरकहतहै॥यहैबांनकमनमेरैवसरे
॥२॥रागविलाजलआमौचौतालो॥हर
कोअैसौहीसबषेल॥टेर॥मृघठदनाजगमा
परहीहै॥कक्षुबिजोराकक्षुकेल॥१॥धन
जोबनमद्युंराजतहै॥युंपंढीयनमैकेल॥
कहैश्रीहरिदाससमऊमन॥तीरथकोसे
मेल॥२॥३॥रागविलाजलआमौचौता
लो॥लिंगयैरेसांमामेरोमन॥टेर॥वंसरीव
जाईमनबहरांनै॥सुकतनांहीठनकिन॥१॥
ध०॥रागविलाजलतालचलततितालो॥
आंठौनिजरांरौहैकांईमहांसुराजराषण
लागाहांआंठौनिजरांरौ॥टेर॥सासबुरी
महांरीनलदहवीली॥पाफोसणकगडारो
जांठौ॥१॥धूंरीजीराजमहांनेदासीकहैबै
करौमतप्रीतमैवांठौरसकसनेहीनिह

देजां नौ॥ धारी सिफां मां हे मूं रौ वांटौ॥२॥
॥४॥ सुनः॥ मन हरवी नौ राज मन हरवी
हो इन गगिया नै॥ ॥४॥ जं च मं च कडु मोह
नी सी पा दें छिना सो कर ही नौ॥१॥ तां व
न जां च कां न गां व को॥

॥ वर जोरी प्रां न व नी नौ
॥४॥ राग विजा उल्ल ता व निता लो॥ श्री त
पटवारौ अंगरंग को है सो वरौ॥ तां व न जां च
है इया कां न को है मा वरौ॥ ॥२॥ तट ज म ना च
के धे न च रौ वे॥ विन व ज वै ल्स को॥ आ जी री
त ब तै मे रौ म न वा व रौ॥१॥ ॥४॥ राग विजा
उल्ल ता न तित लो च ल नौ॥ के सै कर वं ग र
मारी मुर कां नी मारी मा या॥ रहे जू लं ग र वा॥
धी ब मे हर वा॥ गु न र स हा घ विकां नी मारी
मा या॥ ॥२॥

॥१॥ ॥४॥ राग विजा उल्ल ता व
न निता लो॥ तै न नि नि र यौ श्री गिर वर
धारी र स ना र टां नां म नि स वा स र को ट

। जनमडषदाखदहारी ॥ १ ॥ सिवापरमस्कृत
 रविराजतयहसोनास्फटरइधकारी ॥ २ ॥
 जाधीसप्रनुसोनासागरा ॥ मिनेत्रेमतन
 मनधनवारी ॥ ३ ॥ ४ ॥ रागतोमीताबधि
 मोतितालो ॥ दिनदिनआनंदकरतरह
 त ॥ ललनांलावनकेअंगसंग ॥ दिशतो
 हीस्व ॥ हिन्मिन्नातोहीस्वमनकेतरंग
 ॥ ५ ॥ ६ ॥ रागतोमीताबधौतालो ॥ अरी
 होऊदेवनेअरसांनै ॥ ७ ॥ ८ ॥ कुसमतसेज
 नोरउठवेठे ॥ स्फरतरसमसांनै ॥ ९ ॥ १० ॥
 रपननेकबक्तबविनिरषत ॥ सीतवस
 तस्फषसांनै ॥ नंददासप्रचुरीजेपरस
 परा ॥ अंगअंगपयसांनै ॥ ११ ॥ १२ ॥ राग
 असावरीताळुडतालो ॥ मेरीअधियनके
 न्यूनगिरधारी ॥ १३ ॥ १४ ॥ बलिबलिजाऊब
 बीलीबविपर ॥ अतेआनंदस्फषकारी
 ॥ १५ ॥ परमउदारचतुरचितामण ॥ दरसपरस
 स्फषकारी ॥ अनुत्प्रतापतनकउत्तबीदन
 ॥ मांनतसेवाजारी ॥ १६ ॥ सीतस्वामीगिरधर

नविदसजसागावतगोकलनारी॥कहा
वरनांगुतगाथनाथके॥स्त्रीविह्वलहिर
दयविहारी॥३॥धरारागअसावरीता
झडुतालो॥हांबलिबलिजाऊतिहारेदो
ललनांआजमेरेकैसेहोपाबधारी॥दे
कांतमिसआवनोवन्सोपीवमेरोजगिहै
जागहमारे॥२॥अबहीकहानवठावर
करहां॥फंदरनंदुलारे॥नंददासप्रनु
तनमनधनसब॥तेपेहलैहीउबारिार
॥धरारागगुजरीतालचौतालो॥उठ
तनोरवाजजूकेसंग॥कंचुकीकसत
राधिकापारी॥टेर॥किसकिसपरत
नीलपटसिरहीतै॥सिसवदनीनव
जोबनवारी॥१॥अननावतेलाउन
गिरधरजूकी॥रबीहैविधांतसोहस्त
संवारी॥जेअनदृसरवरंगनीदै
प्रियासहितदेषेऊजविहारी॥

रागभुजरीताळडताळी॥ महीकोघम
कोहोय॥ तुत्सुगिरधरनाचे॥ महीकोघम
कोहोय॥ टि॥ कटकिकनीकंनप्रचुप
नूपरासहजमितेस्फुरहोया॥ दृषत
नेकंहतनहीआवे॥ उपमाकोहुजोव
हीकोय॥ सुरनवरकोतिवरनिसायै
रहेस्फुरनरमुनिजोय॥ २॥ ५१॥ रागभुजरी
वीताळडकताळी॥ हिम्हांरीजोडीरारा
जिहपनाथितोदुरवसौराजकूजीहोमां
रीजोडीराराजिहपना॥ टि॥ कवकीहुवाठ
वाडीअरजकरांवां॥ उवास्वथांपरहीरामो
तीधना॥ १॥ ५२॥ रागभुजरीवीताळडकताळी
हिम्हांरासांवलासाजनराज॥ म्हांदुदर
सहीदृषाजामांरासांवलासाजनराज
॥ टि॥ उनीकनीमुधानेणीअरजकरै
ठे॥ सुसरंहाठोकिणकाज॥ १॥ ५३॥
रागभुजरीवीताळडकताळी॥ काईज

गुनोन्ह्यांरौ कीयोबै। मांनैमिजायद्यैसाहि।
बाहंराजा॥टि॥क्रि॥टो॥बी॥दिसां॥ज्वारी॥बू॥दी॥बै॥
दिसां॥॥ध्यां॥सू॥न॥ग्यो॥महां॥रौ॥का॥जा॥॥१॥॥५॥॥
राग॥नै॥र॥वी॥ता॥ल॥ति॥ता॥लौ॥॥सा॥थी॥डा॥महां॥रौ॥
सा॥थ॥नि॥तां॥ण॥॥ह॥म॥प॥र॥द॥सी॥मु॥ल॥क॥वि॥रां॥ण॥
॥टि॥॥इ॥स॥डु॥नी॥यां॥वि॥च॥वे॥आं॥व॥णा॥बी॥जां॥व॥णा॥
मे॥रा॥प्य॥रा॥॥अ॥प॥णा॥सो॥अ॥प॥णा॥वि॥रां॥ण॥से॥
वि॥रां॥ण॥॥१॥॥५॥॥रा॥ग॥नै॥र॥वी॥ता॥ल॥ति॥ता॥
लौ॥॥आ॥द॥म॥आ॥द॥म॥आ॥द॥म॥द॥म॥दा॥॥इ॥ह॥द॥म॥
जु॥ग॥वि॥च॥क्यु॥कर॥र॥म॥दा॥॥टि॥॥बा॥म॥म॥ग॥सू॥र॥
हि॥अ॥प॥नी॥उ॥म॥ग॥ता॥ल॥मे॥रा॥सां॥ण॥॥इ॥स॥
डु॥नी॥यां॥वि॥च॥ये॥ही॥न॥ला॥क॥म॥दा॥॥१॥॥५॥॥
रा॥ग॥नै॥र॥वी॥ता॥ल॥ति॥ता॥लौ॥॥सां॥व॥ला॥कौ॥द॥
र॥स॥दि॥षा॥वौ॥मे॥री॥स॥ज॥नी॥॥सां॥व॥रौ॥है॥कां॥म॥
ण॥गा॥रौ॥मे॥री॥स॥ज॥नी॥॥सां॥व॥रा॥कौ॥द॥स॥दि॥
षा॥वौ॥॥टि॥॥इ॥न॥दि॥ष्यां॥वि॥न॥क॥ल॥न॥र॥है॥
॥इ॥न॥ही॥कौ॥गु॥न॥गा॥वौ॥॥१॥॥५॥॥

वीताळधीमोतिताळी॥जरघडपरावा
नानीसांवळा॥दिशिमोरमुकटपीतंबर
सोहो॥गजमोतनगळमाळा॥१॥पठारा
गनेरवीताळचलततिताळी॥मैतौऊ
ईयांक्यातकसीरमैकेसाजनां॥मैतौऊई
यांकीतकसीरा॥सांहीपीरनप्यारोहीज
णदा॥दिराकबकीमैवाढीगढीअरज
करांबां॥प्यारोमैकेदिलकीजाणदा॥
१॥१॥१॥गनेरवीताळधीमोतिता
ळी॥उममैजोरजोरीवे॥दिलदामेहर
ममास्वडामिजाजीडा॥दि॥उफदेष्पां
विनकलनपरतहे॥पियाचउरहमने
रीवे॥१॥६०॥गनेरवीताळधीमोतिता
ळी॥मनमैरोमोक्षोरेइनवंसीवारिमैमनमि
रोमोक्षोरे॥दिशिमोरमुकटपीतंबरसोहि
श्रवनऊरुळठविसोक्षोरे॥१॥६१॥रा
गनेरवीताळअसदारी॥आजहारेआ

जिहिसां वला जिये तो आज म्हरै आजो ॥ दि
रा ॥ उच्छडीरत नजडा वकी लजो ॥ रंगर
संवात वणजो ॥ २॥ ६ ॥ रास नै रकी ता
जजज दस्तितालो ॥ म्हां नै प्यारो लागे बै
सां वरो बं बालो हो म्हां नै प्यारो लागे बै ॥
दिशा ॥ सप्तसागर अघ हरत कृपा करा ॥ द
रस कीयां उष लागे बै ॥ २ ॥ कंठ सरा उ
जरी हीरत की ॥ किसरा ये रंग वोगे बै ॥ ३ ॥
रदास प्रकृत इनके सुरणी ॥ त्तम ग हमारे ज
गे छे ॥ रा ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ ता ॥ ज ॥ चौ ॥ ता ॥
ज्ये ॥ नैनतनी दग ईरी आली ॥ निस दिन
मिरी बतियां लपिर हे धर को ॥ दिशा ज बने
मोहन सुरली बजाई माई ॥ फुडतर हीर
कबू ॥ और दिहत मोहि धर को ॥ १ ॥ तं न
दी उसा सजित ॥ निस दिन गारहिता स
सत कत मेरी पायत को धर को ॥ कैसे
कजई ये कैसे हरसत पई ये ॥ क्लृक क्लृ

नगिरधरको मेरो हाथ नयो पातर तरको
॥१॥ ६॥ राग सारंग ताल चौतालौ ॥
बैठे हर राधा संग ॥ कंजनवन अपनिरंग ॥
कर सुखी अंधर धरो ॥ सारंग सरगा र
रा ॥ मोहन अतही सुजांत ॥ परम
चतुर गुननिधांत ॥ जांत ब्रह्म एक तांत
द्वक कै वजाई ॥ १ ॥ प्यारी जब गहौ व
न ॥ सकल कला गुन प्रवीन ॥ अतन
वीन सुख सहित वेही तांत सुनाई ॥
वल नगिरधर नला ॥ रीऊदई अ
कंमल ॥ कहत नले नले नले सुंद
र सुषटाई ॥ २ ॥ ६ ॥ राग सारंग ताल
आने चौतालौ ॥ मेरे बल दोऊ औरको ॥ ६ ॥
इक बल है मोहि हरन कनको ॥ इजो बंध
किसोरको ॥ १ ॥ मन वचन करत प्रदी
मेरे ॥ नां हि नरो सो औरको ॥ श्री विठ्ठ
गिरधर नरुपानिध ॥ वधन कल सिरमे

रको ॥२॥६६॥ राग सारंग ताल इकता लौ ॥ अ
री इन लोग न को का हा की नो ॥ मै अप नो म
न ना व न दी नो ॥ टेर ॥ म न दे मो ल लं यो रे स
ज नी ॥ उ म म न ना व न तं दु दु लारे न व ल ल
ज रंग नी नो ॥ १ ॥ ६७ ॥ राग सारंग ताल च ल
त तिता लौ ॥ पर न लागी श्री प विर ष वा सो
ब ल मा मे रे य ह सं त ग व न न की जि थे ॥ टेर
ह रे ह रे स तं वा के थं न व ना ए ति न ति ल व
ट स्र ष व ती जि थे ॥ १ ॥ ६८ ॥ राग सारंग त
ल च ल त तिता लौ ॥ हेरी माई कां न दे स कां
न न ग र वां जा य व से र वा ज हां मे रा पी व
र वा हेरी माई कां न दे स ॥ टेर ॥ वि ष वि ष प
ती या पि या ज्जु कं मे न्दु ॥ बा य र हे वा क्क दे स
॥ १ ॥ ६९ ॥ राग सारंग ताल तिता लौ ॥ आ
नं द आ ज व था व नो मे रै ध र ॥ आ पु मे रे
पी या ही सु र ज न वा ॥ टेर ॥ स ग री ष ष ति न
मं ग ल गा वो ॥ मो सी य नं चो क डुरा इ लो ॥

रागसांवतसारंगतालइकतालो॥ होवि
 रईयांकीठंही॥ पियाजुगवनकीयोवि
 दिसअंबरईयांकीठंही॥ टिर॥ प्रकृती
 विराज्याहंराबागमेहोराज॥ किलविध
 दिसलमेजांई॥ १॥ ७१॥ रागसांवत
 ततालइकतालो॥ वारीछन्नवरारोहोव
 रीछन्नवरारो कंधाम्हांरैआमोबारणे
 होवारीछन्नवरारो॥ टिर॥ सगरीसर्षाभि
 लगइवाकृदिसवा॥ काचीकलीयनजन
 बिडेरे ॥ १॥ ७२॥ रागसांवतसारंगताल
 जलदतितालो॥ होगुमांठीहंराबीरमा
 रीबीरमा॥ टिर॥ नोहैतौसाद्यतेरीबल
 होकबांणबे॥ अषीयां तौसाडीतेरीत
 रणां ॥ १॥ ७३॥ रागसांवतसारंगताल
 इकतालो॥ षसरोबंगलौबवायदोहोमां
 वलाजीहंनैषसरोबंगलौबवायदो॥
 टिर॥ ओखसीरकीवनीरावटी॥ जाली

करीवा लगभ्ये ॥१॥ ७५ ॥ राग सारंग ल
 हरताल इकतालो ॥ मांहीस्तु होनेहडको
 निनाजो होपनामास्तुजीराज मांहीस्तुजीने
 हडको निनाजो ॥ टि२ ॥ ऊनी ऊनी चृथा
 नेली अरज करैठे ॥ इकवार मेहलांथेअ
 जो ॥१॥ ७५ ॥ राग लहर सासां ताल इकता
 लो ॥ वैगनेपधारी म्हांरै पां वणा होव्याल
 डांला ॥ टि२ ॥ आठो जगमिंदरां थारो
 वैसणो ॥ आठी आठी उनाला थारी मौजे
 ॥१॥ ७६ ॥ राग लहर साशंग ताल जलद
 तितालो ॥ हो म्हांरै पनाजीरौ डपटो दजिह
 दरजण म्हांरी अंगायारै हवदि ॥ टि२ ॥ हो म्हां
 राकांतां नै जाल घडावजो ॥ म्हांरी विसर
 रतन जडावो हो ॥१॥ ७७ ॥ राग लहर सार
 गताल इकतालो ॥ पनाजीने कैजो हो न
 लआजो म्हांरै पां कुणा दिसो ताने कैजे
 हो नलआजो म्हांरै पां कुणो ॥ टि२ ॥

घाटी तौ नगारारे म्हां राहे जा मा रू हे स
एग हो जा कां ई ठा पर नू न क्य ठे से न ॥
७८ ॥ राग लू र जंगला तो उ इ क ता लो ॥
कां ता जी कां मण गारा ये तौ म्हां नै वा ला
ला गौ राज ॥ टि २ ॥ वरी ड पे री ऊं जां म्हां ही ॥
यां सु म्हां रौ का ज ॥ १ ॥ रंग रंगी लो ठे ल ठ
बी लो ॥ लो गा लो सिर ता ज ॥ वृ ज नि ध म्हां
रे मन मै व सी या ॥ आ घा प धा रौ राज ॥ २ ॥
७९ ॥ राग लू र जंगला तो उ इ क ता लो ॥
गु मां नी डा पर दि स न जा ॥ म्हु म र व र से ला
पां ली ॥ टि २ ॥ च प च प पां नी प ग प ग पां नी
॥ अ र ज करे ठे थां री म्हा ने नी ॥ ३ ॥ ८० ॥
रा ग न ट ला नू र ता लो ॥ श्री त म श्री त ह ति
प इ ये ॥ टि २ ॥ ज ६ पि स्तु प गु न सी ल सु घ
र ता ॥ इ न वा त न रि ऊ ई ये ॥ १ ॥ स त ऊ ल
ज म व वी न सु ल ठ न ॥ अ म त ड रां न प ८
इ ये ॥ गो वि ष्ण न्दु वि नं से ने ह स वा रू ॥

रसनाकहातचईयै ॥२॥८१॥ राग नट
 लडुता लौ ॥ तासों मांनकी जिथै जौ । अ
 पकरत है निहारे ॥ टेर । रसकेरसनिना
 न ॥ रससों करतष्या ल ॥ उचारों नाषकि
 शरे ॥१॥८२॥ राग नट ता लडुता लौ ॥ म
 धोमाधोनां वःठी जिथै जौ । बौहतकर
 त है नोहरे ॥ टेर ॥ अंतगहेगेकेसहुतज
 व ॥ फिर पिडता वोगे बोहरे ॥१॥८३॥
 राग नट ता लडुता लौ ॥ कांनतेरी मुर
 ली नैक बजाऊ ॥ टेर ॥ जोही जोही नां न
 सुनततेरे सुषकी ॥ सोही सोही गाय
 सुनाऊ ॥१॥

॥२॥८४॥ राग नट ता ल

डुता लौ ॥ अजवनवननालनचाएर
 तरे । मांनकरनां वावर ॥ टेर ॥ जहपि

बौहनायकककनमनअटक्योरीतिर
 गुनरूपमोही तातेतोसैहैरीनवर॥
 ॥ अैसैरीलावनपरतनमनधनह
 जि॥ समऊसयांनी घरीघरीघटतवि
 नांवर॥ हतीकेवचनरुनप्रमपग
 ननई॥ मिलीरीगोबिद्वन्नुसुराषीबंध
 सहागदांवर॥ रा॥ ८५॥ रागसिंधवी
 तावचकतवित्हाको॥ राजथांनैजां
 एाहिराजथांनैजां एा॥ टिश॥ डी॥ कापिच
 लजी॥ नैणां॥ राजथां राअडवड
 बोळपिठां एाहिराजजां एा॥ १५॥ मह
 उकीया माहाराजराजवी॥ राजथांरी
 सिजडीयांरंगमां एाहिराजजां एा॥ २॥
 ८६॥ रागसिंधवी तावचकतवित्हा
 को॥ न्हुंनैप्यारावागोहोराजवागो
 ॥ राजथां रापाधां रापिचसवारेहो॥ टिश
 महडकनस्याउनीदानैणां॥ राजथां

रौकेसरीयांधूमात्तौफुत्वांनारौहोराज
 नारौ॥१॥८७॥ रागसिंधवीतालधीमौ
 तितात्तौ॥ मांहरैशैत्वांआजोहोराज
 आजोहोराजधारीपारीजीकहैवैर
 गनाजो॥टेरागजमोतनकीवेसरत्ता
 जोराजमहांनेत्तौडीतागीकैहवतनाजो
 हो॥१॥८८॥ रागसिंधवीतालधीमोति
 तात्तौ॥ म्हांरौमनमोह्योहोराजमोह्यो
 ॥ राजधारांरौकेसरीयोत्तपैतौमनमो
 ह्यो साधीडांरीजोडवणीअत
 नारी॥ राजधारांरौगजमोतीगतसेह्यो
 होराजसेह्यो॥१॥८९॥ रागसिंधवी
 तालधीमोतितात्तौ॥ राजमहांरीमां
 नौहोराजमंनौ॥ किलओगुणधास्योह
 पनामहांसुरीसलो॥टेरा॥

तन॥ मधर ताइ मुखवै न॥ तजल चीर परमल
धरौ॥ लाज वंत कै नै न॥ १२॥ बपै॥ चंचल चपल
अति स्यां प्रने न मृग कुटिल च कुटिवरा॥ तिल
कमेद सुकनास त्रिवली जहां होइ कंठ तरा॥ वच
न गमन जिह हीन अंग को मल विचित्र अति॥ त
न सुकल म कटि धीन अंग टहां मनी देह डति॥ अ
नेद चंद वर न न वदन सदा अंग निरमल रहो॥
आहार पांन अषित अमल विमल वौर वैवो चहो॥
॥ १३॥ सवैया॥ बाल सी वैसर है सब ही दिन॥ मांन करौ
अति ही कबुलाजै॥ स्वित सरोज हि हेत धरै अति
उजल चीर सरीर हि बाजै॥ वारज को सब नो गृह
कांमनि वीरज नीरज वासु विराजै॥ दिह जही मरु
अनंदति रंजा के रूप पदम निराजै॥ १४॥ अथ
चित्र नील बनं॥ दिहा॥ चित्र रूप सम चित्रनी॥ अ
ति विचित्र रसरीति॥ चित लावत सब कांम तजि॥
निरष चित्र संगीता॥ १५॥ नहि नीरी डर बल न ही
लक्ष्मी रघन हि अंग॥ अति विचित्र ताइ चित्रनी
लोचन चक्र करंग॥ १६॥ बपै॥ अमल कमल द
लवसन नैत चंचल अनीयारो॥ मधर मुख वच
न वासु कंचित कचकारो॥ लक्ष्मी रघन हि अंग
सरबत नगर बजनावत॥ दया वंत अति होत उ
प परमल बजनावत॥ ग्रीवा कपोत गुंघट उरि
यगति गर्यद आर्षद जिहि॥ सील वंत सुविचि
त्र अति कदलिषंन ऊग जंघ जिहि॥ १७॥ सवे

या॥ कामको धामवमो अति सुंदर वारको नाम
 हीसंगजाके॥ वरुज होय न होय सो हीरघवासम
 नोमधकंडपताके॥ चाहनही चिरलो रतिचित्रण
 दृष्टणएसबलक्षणवकोरामरुपावित कामकी
 लको असीयो नामनि धाम है काके॥ १८॥ अथ
 षती लबने॥ तन हीरघ हीरघ लुजा कर पद हीरघ
 नाम॥ चलत चल उलाल अति जान संघनी नाम
 ॥ १५॥ संघनि कस कर कस वचन॥ हीरघ डुर वरु
 ह॥ निहचै अवि लंबत चलता॥ जान संघनी एह
 २॥ अपिया॥ लघलो चन अस कुटिल ग्रीव वि
 हीरघ नारी॥ सदा पीन तन रहे जठर कटी जाको ना
 री॥ कुवसुषम मन कुटिल अधिकतामस तिहि
 कामनि॥ असुण कुसम परिवंस घीत चाहते
 ति नामनि॥ डुर घहिल पटति रति समे असु क
 लावत टटकीये॥ स्फुरत करत हारत नही सेन
 यो चाहत हीये॥ १९॥ संवेया॥ घीत कीरी तन जान
 ० नैक ल कामकी लालको आडुर नारी॥ मिम
 की वात अजान सुधा डुर कंडू जो निकुवास कु
 नारी॥ कारु सों नैक मयात करे सब लब नही नइ है
 असीय नारी॥ २०॥ अथ हस्तिनी लबनी॥ तन नारी
 नारी नारी लुजा॥ नारी उरज अत दाम नारी ग्रीव
 नितंब जै घा॥ चलत हस्त नीमं दारु चिपई म
 नमत सदा जार हो॥ आतं द वचन न कारु कही अ

पनी अस्तु तत्रापुकारै। लाजवृद्धको मूल उषारै।।
अंकुसधर्मकां नगहिनारै।। घापत्वार सब अंग विया
रै।। कट अरु जंघ कलाई मोटी।। करत लड्ड अंगुली
या ठोठी।। निमर वचन अपस्वार थकरै।। गुरजनस
कन मन मै धरै।। २४।। उहा।। अपजस की सलता धरे
वह उलंघन हिजाय।। पंगबंधन अपकृतको।। हस्त
न हस्त सूनाथ।। २५।। सवेया।। कांम किलो लस मै अ
ति आत्र पाय उन्नै पतिया वलि मारै।। जो निकठ
रुबुटे दोऊ फवाहर ही उरवार न पारै।। कंठ पंगंध
षगंद वहै इ हिने इ विचारै।। किलस मै पति हारत
वेग हीने कन हस्तिन को मत हारै।। २६।। सोरग।। चित्र
णी हरणी जान।। संघन रूप उरंगनी।। हस्तिन हस्त सा
मांत।। पद्मनिकी उपमान ही।। २७।। षटकर पलव चित्र
णी।। नव संघनी सरीरा।। दादरा हस्ति निजां नीथो।। इह वि
ध जो निगं नीरा।। २८।। इति श्री घण्टिष पंम समाप्तं।। अथ
पुरुष जात वर्णानं।। उहा।। समा करंग मष्टन हय।।
पगट पुरुष ए आरा नष सिष ल ग ल छ न सकल।।
कहै विचार विचार।। २९।। अथ ससिल बनं।। सूक्ष्म
कोमल मधु वचन।। सील वं त सुग्यो न।। रति विनी
ल अति रुचन ही।। पुरुष ऊस सासु जां न।। ३०।। अथ
करंग ल ब नं।। मधु र वचन मृग मधु तत।। अपल
बुधि चित नीरा।। चत्र साध अति इस्त मुष।। कामी
कनक सरीरा।। ३१।। अथ वृष न ल ब नं।। वृष न ना
म नारी पुरुष हाता कर सूनाव।। कपटी ल छ लं पट

हरी॥ कामके लवकुचो व ॥ ३१ ॥ अथ उरुंगलहनं ॥
 तनदीरघदीरघचरणानवसिधदीरघचंग ॥ सु
 नरुतरुणसंगहृत् वत ॥ रसीयाअधिकडु
 सुहा॥ चतुरष्यठनवजोना॥ द्वादसकरपद्ववप्रग
 ॥ मदनांकुसपरवांत ॥ ससाआहजांनकु ॥
 ३४ ॥ ३५ ॥ समाहुरषपद्वनिधिया ॥ समरतिया
 नामा ॥ उजैपरस्परतिवहो ॥ औरनसोनहीकां
 ॥ ३५ ॥ इति तृतीयषड् ॥ अथ समरतिवर्णनां ॥ ३६ ॥
 ह्यकरनीहरनीहरना ॥ हृषनसंघनीसंग ॥ इन
 मनिस्फुषकपजै ॥ वटैधेमडुक्तचंग ॥ ३६ ॥ अ
 उच्चरतिवर्णनां सोरवा ॥ हृषनकुंरंगनिसंग ॥
 वरुंरंगरुंरंगनी ॥ मतवचइनकेसंग ॥ प्रगट
 उच्चरतिजांतीयै ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ शाशाकुरंगनिसाथा
 रषहृषनकरनीत्रीया ॥ इनकेजनमअक्या
 ॥ प्रगटनीचरतिजांतीयै ॥ ३८ ॥ अथ उच्चरति
 वर्णनां ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ह्यहरनीअतिउच्चरति ॥ मृ
 करनीअतिनीचा ॥ नरनारीतैजौअधिक ॥ तौ
 स्फुषसेजाबीच ॥ ४१ ॥ सोरवाजैसीजोनिगंजी
 मदनांकुसजैसौचहो ॥ तौस्फुषहोयसरीस
 कसारइमजंबरी ॥ ४२ ॥ इति चतुर्थषड् ॥ ४३ ॥
 जिहत्रियकोरतिरुचिनही ॥ पियबिलसैजो
 हि ॥ नीमनिमुदतनहायकवु ॥ हृषासक
 यआहि ॥ ४४ ॥ अतसुचित्रियपुरषहिमित्तौ
 हिकेकंश्मनाइ ॥ जैसैरोगीनीवकौ ॥ अंष

पीजाय॥ ध्वजिजनजांनैकोकपटि। करैसजत
विचार॥ अतसुखउपजैरबनिकों॥ रतिसचि
मांनैतार॥ ४३॥ अथकांमनिवासहेहा॥
मकैवांमदिसि॥ वसतसद्यंगर॥
जगायकै॥ पियविलसेतियसंग॥ ४४॥ वंदुधर॥ प
वाअसतश्रीमंतकांम॥ तिहकरजदतरति
नांम॥ द्वितीयाद्गचुंबनकरतकंत॥ ४
सुदितत्रियअधरदंत॥ जबचौथकामआवैकपो
॥ तबचुंबनषनकरिकिलोल॥ श्रीवांपाबै
काषमेत॥ डुडुगौरकहोनषदांतदैन॥ सासा
रमदंतकरैउरोज॥ तबवसतआयनेहचैममो
ज॥ आवैजुकांमकोइहविचार॥ करपरदन
कीजतताहतरि॥ नवमीसुनाजिकटदसैहोय
करिमरदनकीजतअंगहोय॥ एकादसमनासिज
नगनिवास॥ तहंमदनधामकोकरैवास॥ तादि
नजोकीजैबहुप्रसंग॥ तबप्रवैतरुनितबह
अंतंग॥ द्वादसिमनौजतिहजंघसंग॥ रतिर
वनत्रयोदसगुल्फसंग॥ चोदसकोचरणकरै
निवास॥ अमावसपगअंगुष्टवास॥ करपर
नकीजतताहतरि॥ इहाविधजुरुचुउप
जहिविचार॥ ४५॥ ५॥ अमावसपरिवाविम
लापदअंगुष्टअंतंग॥ जिहमगउतस्योरतिर
वन॥ चदतचलोतिहअंग॥ ४६॥ कृष्णपक्षको
आदिदि॥ सुकलपक्षविधजांनाजंविहैति

तिथि निरखके अंग की या पहिचांत ॥ ४७ ॥ मंग
 लाबंद ॥ ॥ १६ मनी परिवाह ज पांचै चौ पचाहे
 नोग ॥ चित्रणी आवेब विदसमी कदसी संयोग
 ॥ संघनी सातैतं जतिरस शृणार सदह तमनी ज
 ॥ हस्तनी क्षमीं नवमि चौदस वचन विकत चोज

१	११	मंग मध्ये नवदान करण
२	१४	मावी आषुचुवन करण
३	१३	अधर मध्ये मदन करण
४	१२	गात्र चुवन करण
५	११	कठ मध्ये नवदान करण
६	१०	काश मध्ये मरदन करण
७	९	ऊच मरदन करण
८	८	उर मध्ये मरदन करण
९	८	नानि मरदन करण
१०	६	कटि मध्ये मरदन करण
११	५	नग मध्ये प्रहार करण
१२	४	जंघ मध्ये मरदन करण
१३	३	गुल्फ मध्ये मरदन करण
१४	२	चरण मरदन करण
१५	१	पग अंगुष्ट मरदन करण

॥ ५७ ॥ निस विच मरति पद मनी जांत चित्रणी
 जांम ॥ बीती निस विध संपनी हस्त

शंभु ॥ धर ॥ इति पञ्चमः ॥ अथ स्त्रीविरतप
नो ॥ कंसागौरीसमकै ॥ बालातरुणीजान ॥ प्रो
टावृधानांमनी ॥ एषटवैसवषांन ॥ ५॥ अति
॥ सातवरषपरजंतसुकंसाजांनीये ॥ तासौका
मकिलोलनकबहुगंतीये ॥ बालापणकौषेल
सदापननावई ॥ फुनिहां ॥ कबुइकलोकविला
सनमनमैआवई ॥ ५॥ आठवरषतैगौरीतेरह
केतले ॥ चाहेचत्ररषिलोनासुंदरअतिनले
॥ जोजनविलसैतासअधिकसुषपावई ॥ फु
निहांताकौअधिकविलासनकबहुनावई ॥
५॥ बालातेरहआदिजुवीसहकेतले ॥ चाहेप
नप्रसुतसुसोरंनअतिनले ॥ तासौकांमकि
लोलहेतजोलावई ॥ प्रीतवडेडरुओरमहासु
षपावई ॥ ५॥ तीसवरषपरजंतसुतरुणक
हावई ॥ नूषनचीरअनुपताहिअतिनावई
॥ तासौकांमकिलोलहेतजोलावही ॥ पूरणप्र
मअनंदपरसपरपावही ॥ ५॥ बालिसवरषप्र
माणसप्रोढानांमनी ॥ चाहेओरकबूप्रमंतजि
कांमनी ॥ जोजनकांमकिलोलताहिसंगलावई
॥ फुनिहां ॥ नावअनेकसौनामिनिताहिरिजा
ई ॥ ५॥ फुनिवृधात्रियहोयश्रवणसुणनीज
ये ॥ तासौकांमकिलोलनकबहुकीजये ॥ चां
मनिथोरीप्रीतबोहतकरमांतीये ॥ फुनिहां ॥
आपनवेसविचारआपजियजांनीये ॥ ५॥ ५

१॥ जो मन नावै नामिके ॥ पवै देहि सो ताहि ॥ प्रव
वतहितचितरुचिवढे, करै श्रीतनिरबाहा
॥५७॥ इतिषष्टमब्रं ॥ अथनारीपरिज्ञा

॥ द्विगुनच्छुधाकामनिजवरापन
हवषटगुनहोया ॥ मदनअष्टगुनजाजदस ॥ दि
ययहविधसवकोय ॥५८॥ अथविचचारण
लबंत ॥ फुरवेसरठंदाविचचारणसंगरहैजोका
मनि ॥ रहैसदाभायकेनामनि ॥ बज्रपुरपत
मैनारीरहै ॥ नासैशीलकोकइमकहै ॥५९॥
विरक्तवतीलबंत ॥ दोधुकबंद ॥ उतर
वेगनद्वैकवरूपतिकैमुषवोरनवांमनिहरि
॥ षोढैपीठदयेपतिकैसंगुचुंबनकोमुषपीठ
कैमारै ॥ जोपतिकोकोऊआवतश्रीतमडरज
नसोअपनैजियधारै ॥ लबतएजिनइमतमे
श्रीयद्वितहोयसेनिद्विचारै ॥६०॥ अथअ
नुरागवतीलबंत ॥ ठपै ॥ दृगनरिनिरयतति
लजहसतकुलुअंगदियावत ॥ बिनमुषदेत
उधारबिनकमुषद्वेयदुरावत ॥ चलतथंकरत
ऊपरहतचरणआनरणसुधारत ॥ करका
टाहामुषमुदितप्रगटलटजटीसंवारत ॥
पलबंचरणबहुवीषनतपियनिहारिकरु
तऊच ॥ अनुरागवतीइहिविधिरहिश्रीतर
तजिहियधिकरुच ॥६१॥ अथगोमावती
लबंत ॥ चितवतकरगहि

रदन-नारिसि॥ अधर-आप-रुचि-गहित-
गबज-देष-त-आरसि॥ सषिकों-अंक-हिन-र-
सुकर-प-ध्व-व-च-म-का-व-त॥ दोर-पौर-पे-आय-
वि-चित-फिर-च-क्त-ला-व-त॥ अति-ज-ना-त-वि-
न-स-मै-चित-क-ब-ज-स-क-च-ल-का-कर-त॥ अ-
च-ल-उ-रो-ज-ट-प-त-न-ही-म-द-न-म-त्र-श-हि-वि-धि-र-
त॥ ६३॥ अथ-का-मा-व-ती-ल-ल-त॥ ॥ ज-ब-
व-न-म-द-म-त्र-क-ंत-वि-बु-स्यौ-चि-र-का-ल-हि॥ का-म-
नि-न-ए-प्र-सू-त-दे-त-ज-ल-नि-ज-ना-ल-हि॥ उ-ष्-
ती-ज-व-त-रु-णि-मा-स-दो-य-वी-च-त-जा-त-न॥ नौ-
न-ग-र्भ-नि-वा-स-का-म-ब-हु-मा-प-त-ता-त-न॥ ६४॥
॥ इ-व-ती-ल-ल-त॥ दो-हरा ॥ नै-न-न-मा-वे-सि-थ-
त-न॥ क-है-स-क-ंप-त-बै-न॥ क-लि-क-ला-इ-बू-टो-
हे॥ ज-ब-हि-इ-व-हि-तिय-में-न॥ ६५॥ अथ-तारी-
॥ ॥ नि-ल-ज-र-बो-ल-त-अ-धि-क॥ अ-ति-ता-
म-स-अ-ति-हा-स॥ क-है-को-क-व-ह-त-रु-णि-के-
क-ल-क-ल-ल-न-ता-स॥ ६६॥ जा-की-जु-ग-ना-है-जु-
र॥ अ-सी-जौ-त्रिय-हो-य॥ क-ह-त-को-क-व-ह-क-टि-
ल-म-त॥ ना-हि-न-प-ती-या-को-य॥ ६७॥ त-न-क-ंप-त-
मा-र-ग-च-ल-त॥ च-ष-पि-ग-ल-उ-र-वा-ल॥ ज-हां-त-हां-
उ-म-दे-षी-यो॥ वि-न-चा-र-न-व-ह-वा-ल॥ ६८॥ गि-र-त-
व-र-प्र-रि-ता-वि-ह-ग॥ जि-हि-न-ष-त्र-को-ना-म॥ प्र-ग-ट-
जु-ग-त-मै-दे-षी-यो॥ वि-न-चा-र-न-व-ह-वा-म॥ ६९॥
जि-ह-कै-प-ग-अ-ंगु-ष्टि-घ-टा॥ उ-प-गा-जौ-व-टि-हो-य

ब्राह्मण ही पतिके हरे। चूजन ब्राह्मण ही को ब॥
 १७॥ जाकी ना निगं नीर नहि॥ अथ वर होय जिहि
 सप॥ नि सचे होय दरिद्रणी॥ जद पिसं ग्रहे नु प
 १८॥ हीर घ होय अनामिका॥ उपगा ताते हीना॥
 ताको पति जीव तर हो॥ बंध होय कैतीन॥ १९॥
 कथा वती निजा वती॥ सो गवती सीनां मा॥ उच्च
 के सरसनां कविना॥ कब ऊ न पावै दाम॥ २०॥ अ
 ति लक्ष अति हि विसाल तन॥ अति लंगर स
 होय॥ तातिय को अपनाय कैने दन दी जो को थ
 २१॥ कपीन इक छीन ऊच॥ अधिक छीन ऊच
 अंग॥ वात करत तिहित सुणिके॥ फल नति अ
 वउतंग॥ २२॥ पारिम होय सब गात परा॥ वनत चा
 लउ जाले अति दुस्व ल अति छीन तन॥ सोल
 न पावै बा ला॥ २३॥ जाके रूप कपोल परा॥ वात क
 हत होइ जा हि॥ तात मात ति हांत सुणिके॥ नि
 सचे जीवै नां हि॥ २४॥ अधर पां नता लर सत॥
 दसन न ऊपर स्यां मा॥ उच्च दंत हीर घ अधिकारो
 दरिद्रणी वां मा॥ २५॥ जाके अधर विसाल अति
 चो ल त सदा ऊ वैणा॥ एतारी न हि व्या हीयो॥ नि
 रय परष युग नैणा॥ २६॥ शते सप्त मधुंग॥ विर
 ऊ ह्र॥ ऊ मडिया॥ जो न हि जो नै श्री त गति॥ र
 हेम लिन सो चिना॥ पतियारो ति हि नां परे॥ न
 मुराषो अति चितर॥ वचन सुय पुट फुना वै॥ २७॥

कवि न कृपण अति होय । षय न ही आपषवावे
॥ सो गवती सीर है वात न हि मुदित सुखां नै ॥ श्री त
हरण त ब होय जीत गत जो न हि जां नै ॥ ८० ॥ दुहा ॥ पि
य नागर मूरुष त्रिया ॥ त्रिया नागर प्रिय कूर ॥ प्र
न व च उरुं के नां मिले ॥ होय श्री त रुच हर ॥ ८१ ॥
इति अष्टम सं ॥ अथ पुर मष्ट गार वर्णने ॥ वि
हरा ॥ अति उन्नत न वास चीर पर मल संग धा
रत ॥ पां न नि आं न नि असु परा गठिन र उ चार
त ॥ रत न क न क नुर माल हा स्प व च न त मुष ना
स्रत ॥ मन उदार ता बहु त के स नां वि अति आ
षति ॥ आनंद त रुण चित हित व ठ त इ ह वि
ध जो कां मी रहत ॥ मनु हर न हर एत न कां मनी
क बु उ पाय इ ह वि ध क ह त ॥ ८२ ॥ अथ वती व
नं सारण ॥ नृपति मंत्री हीन ॥ इती वित कां मी पुर
ष ॥ ए हो कृते रहती न ॥ को कं सार इ म उ च रे ॥
८३ ॥ ब ह नु जं गी ॥ सुषी मालनी शालनी यो चिते
री ॥ नटी नायनी घो बनी धा इ च रे ॥ सु सं मा स
नी ना टि ती बाल वारी ॥ तं बोलणी त्रिया ए दु ति
का वि चारी ॥ ८४ ॥ इति द्वात्रिंशत् ॥ अथ वीर्य क
रणं ॥ दोहा ॥ सिव वीर जलो हा ह मे ॥ क न क सु
तां बा होय ॥ चारौ धात सु धात सु धात कर ॥
घातिरसिक सब कोइ ॥ ८५ ॥ पय दृ त आमि
ष मो चर स ॥ मिर च मू स ली स्यां म ॥ मधु मुं डी

... २३७ ॥ अथुदुधी अजिराम ॥ ८५ ॥ संपाति
 लीगुड उडहागो लंपी परपं ॥ कौच बीज धी धान
 टा ॥ असु महुनि जीमं ॥ ८६ ॥ मन मरदन तिजतेन
 कौ ॥ परमजपां निजि लोहा ॥ अवर कडू जिजमनौ
 धान सबन मै होश ॥ ८७ ॥ उंदनाराज ॥ नहो वृष्य
 नौ मरै न एक गौर पाई ॥ मंगाय मान कांगुनी सुध
 मै नुनाई ॥ टांक हो प्रमान जांन शत उठपा
 ई ॥ कामनी कि लो लनै अनं कं हपाई ॥ ८८ ॥
 ॥ धातवधार नवल करन ॥ हम पूठे जो की ई ॥
 पयस मान ति कुं लोक मै ॥ अवर न उदध को ॥
 ॥ रतिकी अंत ज पय धिये ॥ घटै नवल ति ह अंग ॥
 साहिर बन की सुचि वंटे ॥ चो गुन वट अ नंग ॥
 अथ स्थं नन ॥ मुही इ सफ न जाय फल ॥ जा वं ची
 अहि फे ना विजया अज वाय न कुं तै ॥ सातौ थं
 न मै न ॥ २३ ॥ उ पय ॥ ससिके सर दिंग लो ग रां
 जाति फल जां न त ग वि टांक अ हि फे न टं कं टि
 इ म ग म ह मान त ॥ सक ज दी स इ क गौर साथ
 वि न इ क उ व टा व त ॥ गुं ज हो इ पर वां न जां न
 वटी व ना व त ॥ आ नं ट पी न पां न न सहि व टी ए
 क न य त पुर स ॥ त व ज ग म नो ज मु च न न ही
 र ल ग न ये न अं म र स ॥ २३ ॥ सोर ग ॥ च उ र गुं न
 ई फे न ॥ एक टांक हरि व धने ना ॥ र है थ कि त कै मै
 ॥ जौ वारि हरि व सर ह मै ॥ २४ ॥ अथ म
 क कामे सर विधा ॥ हो ह रा ॥ अथ म

रवा॥ बरजअजमोहअनंदा॥ हररबहरेआवरो॥
 स्वविहरीकंद॥ १५॥ धनीयामोयामोचरस॥
 गजपीपरअनिरांम॥ सिबरबारषजूरफल॥
 लसुसलीसांम॥ १६॥ पिरचकायफलगाषरु॥
 परपत्रजआंनि॥ धतुरासुवतालीसतज॥
 ररुजांत॥ १७॥ सुकेबीजअनारके॥ जीरासेतअस
 त॥ चित्रानाडंगीसुनग॥ कौचबीजसेंलेता॥
 १८॥ मकुलेठीपंकजगटा॥ नवलसिंगोरेजांत॥
 कुलथकाकडासिंगघृता॥ नागकेसरीआंन॥ १९॥
 उहकरमूलसितावरी॥ उषधगुणतालीस॥ टांक
 रसबआंनिकै॥ अतिसुषमकरिपीस॥ २०॥ त्रि
 गचिरांजीजायफल॥ गीरीबुहाराजांन॥ दाषदा
 लचीनीनवल॥ अरुएलाळकआंन॥ २१॥ ईसफ
 दजावंत्रीललित॥ टांकरलेआउ॥ २२॥ सउषध
 पीसके॥ न्याराअनतरषाउ॥ २३॥ तीर्षपांचसेर
 गिडुग्धमंगावौ॥ निरजलनाजनमेउवटावौ॥ च
 गीआधसेरलेआवौ॥ वसनबांधपैमैठिका
 वौ॥ २४॥ चंद्रायली॥ दधिसमांनजबदधसुगाट
 निहारियै॥ विजीयावसनसमेतनिकारसुम
 रियै॥ ओषधआसगंधआदिसुंआनिरलाइयै
 ॥ फुनिहां॥ पावकमंदविचाररपकाइयै॥ २५॥ दु
 हा॥ पयमैपयजबसोषिहै॥ वासुसमकुयजाय॥
 लोमआदिओषधसकल॥ तामहिदेकुरलाय
 ॥ २६॥ नुयपरधरौउतारिकै॥ जबवहकबुकसि

राया ॥ टंक जुगमस तवीसत ब ॥ दीजे बांमर वाय
 १२ ॥ फुनि विवेक करि कै सकल ॥ मोदक जीय वि
 लास ॥ नाम तास मोदक मदन ॥ स्फंदर मधर स्फवास
 १३ ॥ धात करत अरु बल धरत ॥ याह के मनस ज्ञा
 तीरा ॥ अनम उपावन दुष हरन ॥ विय जावन रति
 धीर ॥ १८ ॥ इति मदन मोदक ॥ अथ बंदगीता ॥
 ॥ हुंताक पक सुस्वित महि द्वैटां कपी परमारिये ॥
 तिसलायके पमोज ऊपर सुंदर सवारिये ॥ पावक
 मध पकाइ पीपर काटि गं हसकावई ॥ उषध सं
 खरण करि सुखरण हीन अंबर बांनई ॥ फुनि अ
 धटां करवाय मधसौं निगलि पसुकी जिये ॥ नि
 जमन हि अत अने उपजे ॥ तरुण को सुषही जि
 यो ॥ सोरगो द्वै न ज बल गनारा ॥ त बल ग सुष
 पावै न ही ॥ नीजो चतुर विचार गरीत एक नरतरुण
 की ॥ १९ ॥ सहस्र गुड आंन ॥ पुंसो फुनि नरस
 लावै रतिकर कमल निजावै ॥ ११ ॥ ७ ॥ कंबन
 अर बिंब गुंज नरा ॥ उरग वता कै संगार बनष
 वावै रवन को ॥ निसबै जवै अनंग ॥ १२ ॥ कीटो
 यजे सरु किटा ॥ वनमै तास निवास ॥ अधिक
 फैन मुषतै तजे ॥ तिन पर ताको वास ॥ १३ ॥ अकरै
 विरो नी फैन महि ॥ मारै कीटनिकारि ॥ बाल
 वें न संग ही जिये ॥ द्वै मदन जल नारि ॥ १४ ॥ ज
 पे ॥ पथम काम कि लो ल बाल संग चिर लो की जे

* नारी प्रवृत्ति विहारकैः। उरुषत्र वहित त काला दोऊ जो
 र अतिरुचिर है। मुदित होय तिय बाल ॥ ११६ ॥ *
 ॥ मदन सदन को दलन काटि ऊस ताते। दीजे
 बिन ऊपर बिन हेठ चतुर अति चपल चला
 वत ॥ ऊपर हेठ चलाय बिन कनी तर पै गत
 त ॥ जो तीन बार ऐसे जतन कवि अनंदा
 मी करत ॥ कामन मनौ जनि छे द्वै को कसा
 रइ मउ चरत ॥ ११५ ॥ ७७ ॥ जो कामी को मदन
 जल ॥ निकट न पऊ औ होय ॥ तो तिय एक जत
 न करे ॥ जानै चतुर जकोय ॥ ११६ ॥ सोरवा ॥ काम
 न अपणे पांण। सहरा वै प्रिय जघ जुग ॥ जतन
 सुइ हविध जान ॥ हित प्रावै रवनी रवन को
 ॥ ११७ ॥ अथ स्थूलीकरण ॥ जो जन को रति नीव
 ॥ न हीट पतिता की तरुणि ॥ हित न होइ डुरु
 वीच ॥ करे सुअस्थूलीकरण ॥ ११८ ॥ गंगे रवाक
 निरमूलन औ गयं दपीपली ॥ ११९ ॥ जु सम आसंग
 ध आं नीये वचानली ॥ समानुचषनु आं नके सु
 लिंग लेपकी जिये ॥ वमो सुना वसा जिहारि
 को आनंद दी जिये ॥ १२० ॥ सहित ठरी राषु सबे
 सम आं नीये ॥ अति सुषम करि पीस वसन महि
 बां नीये ॥ मालकंगुनी तेल एक सम बो नीये ॥
 मदनो ऊस गुरु होय लेप जो वानीये ॥ १२१ ॥ ७८
 ॥ फरत समै कामी रसक ॥ आं निरुधिरत म
 चोरा ॥ मदनो ऊस परदन करे ॥ अति ही होय
 कंगेरा ॥ १२२ ॥ कनकरि पु चंबेली

पत्रवंतंसेलीजीये॥ मनसिलअरुक्कठपय
व एकत्रकरी॥ जीये॥ सककरसमपीसतेवत
मिरलावै॥ अगनमैअवटायताकठितठाननि
नावै॥ १२३॥ - ॥ शिष्यदसाकलतेन
ठनायसुलीजीये॥ मनांकुसकांमरदनकीजि
ये॥ अतिगरिष्टजोरवरकराईवै॥ तरुनीसों
हिलमिलकेमनहिमनाईये॥ १२४॥ वंद्यधरी
॥ जोषाइजायफलसदाशंभ॥ संकोचनहोइजु
मदनधांम॥ लौकामीपावैकुलासा॥ मनुतिया
वरधदाइसबिलासा॥ १२५॥ सबैया ॥ शुभदरि
मवावसंगायकेनामति तनलोहसोषंमकरै॥ ठ
नपुरातनवीरकेसंयुततांवेकेलाजठवीचधरै
॥ धरपावकुअपरताहिपकायकेअंबुजमौति
हचंगनरै॥ फिरलीजीयेअंबरसोंदकेसंबस
वाहेसुकाएतेकाजसरै॥ १२६॥ चंडाइणाथोरै
सोअंबरफारिविरंगहिधारीये॥ जोनीजैतिह
माहितताहितिकारीये॥ संकोचनअतिहोय
तसंकाकीजिये॥ फुनिहांवाटकेलिअनंद
महासुवलीजिये॥ १२७॥ मुक्तविवविधचौपइ
ठिनमैधातजातजिनहोशारतिरंचकप्रवै
जुसोश॥ सोकामीइऊओषधकरै॥ प्रवैतवेग
धातुनहिपरौ॥ १२८॥ चंडायणावदा॥ नास्योलोह
दसटांकसूवसमलीजिये॥ मिश्रीउनेप्रमा

एक कीजिये ॥ दिन ६ कीस प्रात जो जिन
६ है ॥ फुनिहां ॥ परे नवीय बिग धाउन हिजा यहै
॥ १२८ ॥ सोमरोग तो पी प्रति करै सरति जो का
नी ॥ कै चिंता बौह्या पेनामिनी ॥ तातै सोमरो
जो होइ ॥ निसचै वैद्य कहै सबकोइ ॥ १३० ॥ ६६ ॥
मदनसदन कै रतिसमै ॥ चले सरद बछ वारा ॥
रघन उरषतन ॥ नासुषपा वै नारा ॥ १३१ ॥ ब्रह्म
फल कदली पर पकषांरु मधलायके ॥ तीजेरस
आंबेरस जल औ टायके ॥ प्रात सात दिं कामि
जोस मषाय है ॥ फुनिहां ॥ रहै नको ऊरोग महास
षपाय है ॥ १३२ ॥ फलषज्जर कदली समरस जां नी
ये ॥ तातै दना ताल मषांता आंतीये ॥ तीनेपीस
दुषसंग पी वैनामनी ॥ फुनिहां ॥ पावै परमकुला
सऊरोगन कांमिनी ॥ १३३ ॥ एला लघुपी परीसी
तसिला जित आंनि ॥ फुनिपीस ठां नकै वरीकां
धौटां क होइ प्रवांन ॥ पुनि प्रातसमै तंडुलके ज
लसौं नित कर जे उठषाय ॥ अतिसुष उपजे ज
हिदेषतां कहत आनंद उपाय ॥ १३४ ॥ ६७ ॥ कदली
दलकी लसमकर ॥ तासै हरदर लाय ॥ फुनिस
लसौं लेपीये ॥ हस्ति निरोग निहाय ॥ १३५ ॥ उड
चूर्ण मूजुवासहित ॥ सुद विनाई केंद ॥ गोपयं
पीवै तरुणि ॥ सुषपावै आनंद ॥ १३६ ॥ कलविष
वैपरी ॥ अरजुन बाल पिनासु आंने ॥ त्रिफलास
हितर लाय वषांने ॥ तिलके तेल मेल अवटावै ॥

करे स्नांमकचदिनप्रतिनावै ॥२३॥ नोऽञ्जोरदा
सौतमंगावै । ति जके तेलमेलउवटावै ॥ चिह्न
नपरलावैजोकाय ॥ कचकाजरजौसो जा होया ॥ २३ ॥
) अजाइध-नगराम-ननिजौ ॥ सरसपातफुनि
सरसघनिजौ ॥ कचलावै कांसीमिपीसा ॥ अति
स्नांमकरैजुविसीसा ॥ २४ ॥ जौचंपेकेफुनमंगावै
) बीजधदूरा कौरसलावै ॥ सजलपीसजौलावै
केसा ॥ चिह्नर होइनव कजलवेसा ॥ २४ ॥ रसनी
इंआवरेपिसोवै ॥ दिनइकवीसकेसपरलावै
नाकेसरलहोयकचेस्नांम ॥ घनीवारत्रैचतत्र
जिरांमा ॥ २५ ॥ डहा ॥ वारनकेचिजवारके ॥ मधु
रतेनकेसांगा ॥ कचलावैइकवीसदिना ॥ वटिवा
रवकुअंगा ॥ २५ ॥ वासुनकेदितवारके ॥ महिम
पयकेसांगा ॥ कचलावैइकवीसदिना ॥ वडेबारव
कुअंगा ॥ २६ ॥ इतिकल्पविध ॥ अथलोमखा
ध्व ॥ वंजाइला ॥ पाचटाकहरतालटांमजौषार
पोसतआनरलायटांमइकवारने ॥ चूनाजरसो
पासकेसपरलाइये ॥ फुनिहा ॥ वारनकोकरुनांउ
नकवहुवाइये ॥ २६ ॥ चोप्रइ ॥ चूनाअरुअंनो
हरताल ॥ टोकपीसकांजीमैराना ॥ नावताचिह्न
इरुअंजामहि ॥ कहुअदेहतीयामैनां ॥ २७ ॥
) यमजस्तकोचूरनसावै ॥ बिमलेतेलकटम
धउवटावै ॥ सातदिवसफुनिधामसकाइयांकी

जतकेसकुरकयजाय॥१४६॥प्रथमरोमसबकुरकरा
 ऊपरतेनकररकौल्यावे॥कैऊचलेकौल्यावेनीरा
 कबहीनउपजेबालसरीर॥१४७॥कदलीरसकदली
 रो॥वीसवारप्रलेपसवारो॥हरहोइकचसकनकी
 कोककलारसनास्नित्नीजे॥१४८॥ ॥
 गोदधअरुपीसैहरतारा॥चूनाउन्नेकदलीर
 रा॥करैनेपतीनजौनांम॥तहांनहोयुवारकौधां
 म॥१४९॥इतिरोमसाजनसंहरणं॥वैजायंसा
 सामसपीपरलेंगकवफुनिजांनीये॥आसग
 लालकनेरबिडानिजआंनीये॥कामनिकेतव
 तमेनऊचलाईये॥फुनिहां॥नारीहोइउरोज
 महासुखपाईये॥१५०॥६॥घरिमफलकटुते
 नमहि॥ऊचलावैउवटाय॥उरजहोइआतिही
 कठित॥दिऊश्रीफलनाय॥१५१॥कंठरागकरण
 चौपईवजबावचीबाल्हीअरुआप्रक॥मांभन
 हरिदजांतकुनिनद्रक॥चौदसमाघपचअंध
 यारोपीवैपीसबैसचौबारो॥१५२॥मिरचऊनीज
 नलेसमदोऊ॥वरषएकलौसाधेकोऊ॥मध
 रअमलकबुषायनसाय॥पिकसमकंठजुत
 कोहोय॥१५३॥६॥सुंठीमुंठीविहरमी॥वचपीप
 रअनिरांम॥सातरातमधसोन्नये॥करैरुगंध
 पगाना॥१५४॥७॥सपतिवारणचौपई॥हरसोत
 आंवरैल्यावे॥समकरपीसअंबसांप्पावे॥सात

दिवस जौ पीवै कोइ ॥ ताके पुष्पनिवारण होइ ॥
 १५५ ॥ त्रिकों के सके पातदि ॥ समकर जौ पीवै उ वि
 प्रातदि ॥ ताके पुष्पनिवारण होइ ॥ निजनागर
 जातत सबकोइ ॥ १५६ ॥ वांमकरण ॥ ॥ चीता
 और धातुसमत्यावे ॥ समप्रवानजन्ममे उवटावै
 उष्यवंतवनिताजबवनिता होइ ॥ तीनदिवस
 लगपीवै सोइ ॥ १५७ ॥ गजपीसताकोले आवै
 ॥ फुनिस्फकायके तासपिसावै ॥ दिनते चारना
 रजोषादि ॥ निसचै तरुणवांम क्यजाहि ॥ १५८
 बालकदसनजे पहिले परै ॥ आदितवारस्फ
 कंचनजरै ॥ तरुणवांमसौ आनिबंधविपे
 तस्फवांम महास्फपावै ॥ १५९ ॥ विजयबंदर
 वर्षतीनको आनिगुरु ॥ दिनपतरहु उज्जित
 निसषायजौटांकदसा ॥ नारिवांमिच्छुयजत
 १६० ॥ अथ ब्राह्मणसौ पईवे ॥ ॥ ॥
 राईल्यवे ॥ स्फवरके वरहिचतुरांम ॥
 सौमुखपरलाइ ॥ वांमसुरकरे ॥
 लषस्तजौमुखमले ॥ वदतक
 ॥ केवाहीके आदी ॥ रक्तक
 अथमुखकटकहरण ॥ चार
 रुलादिपिसावै ॥ सात
 मुखपरकटकनदि
 वहो ॥ १६३ ॥ सीधोजे
 सौ फुनिजवदि

मुखविचित्रकृतकहरे ॥ १५५ ॥ मेवरकटुकअस
 हरदा ॥ अजाइधुनिआइ ॥ एपिसायजोमुखमिले
 एषोवैनिजताहा ॥ १५५ ॥ उवटणा ॥ हरदगोषरुसुव
 नषा मोथासरस्यांजांन ॥ कासमीरकसरलधका ॥ टां
 करसमप्रांन ॥ १५६ ॥ टांकमारचंदनअरुण ॥ सम
 ऊसमतिहकार ॥ तवलेचरांजीटांकदसा ॥ पीसोस
 कलसमारा ॥ १५७ ॥ संबहूरतकटुतेलमहि ॥ करे
 जुउवटनकोइग ॥ विमलरूपराजेतरुण ॥ कम
 लवदनमुखहोइ ॥ १५८ ॥ पसनिवार ॥ अथममसाके
 काटिकै ॥ हरिरक्तनिकास ॥ चनासाजीपीसकै
 निपकरैफुनितासा ॥ १५९ ॥ अथमुखनिवासह
 रणं ॥ चौपई ॥ सिववीरजअरुक्तवमंगावै ॥
 मोथासहितेठीलेआवै ॥ धनीयाअरुइलाइची
 जांन ॥ जलसौंपीसमुखमिलेआंन ॥ १६० ॥ नषजप
 त्रचंबेनीआंनै ॥ पत्रजुफुनइलाइचीजांनै ॥ उरी
 बांधपांननमेषाइ ॥ ताकीमुखकवासतजजाइ ॥
 १६१ ॥ जोनऊबासहरनाचौपई ॥ मधरतेलमे
 नीबरलावै ॥ तरुनकिरनसौंतप्तकरावै ॥ जा
 कीजानडुरगंधअतिहोइ ॥ तरुनीतेललगवै
 सोइ ॥ १६२ ॥ काषकवासहरणंइडाइणाडं
 दतबा ॥ नहुमजानीये ॥ इष्टहिलगगहोसुचुना
 आंनिये ॥ कामनिकेकासीकाषजोलाइये ॥
 फुनिहा ॥ कोककलाइमकहैऊवासनसाइये
 १६३ ॥ चौपई ॥ मोथाअरुइलाइचीजांनै ॥ नष

कचूरफुनिपत्रजयांते॥सिरमहिमारिहायने
 काश॥अतिस्ववासनिजतातेहोय॥१५॥दोहा
 समकेवराआदिदेभितिलस्ववासतहोश॥केन
 कजेवरलाईये॥इहजांततसबकोश॥१६॥
 इतिश्रीकौकमंजरीकविआनंदकृतवियविधो
 नदूंसमाध्याय॥अथमोहनतिलक॥चंद्रायण
 ॥स्वितआकजरक्वकिमोयाजोनीये॥श्रीलिजो
 निजमनसिनिरजगंतीये॥पांचूपीससूधि
 सटीकाकीजिये॥द्विमतमोहैनारमहासूधलीजि
 ॥१६॥दोहापत्रजालुकमलजल॥मकुलेबीव
 जांत॥कंपूसौसबपीसके॥तिलकनाजरवा
 ना॥१७॥चौपई॥कारीबरपीपरलेआवै॥म्रीटास
 गीओरमंगवै॥अपनेअंगमेलजानिलेह॥पांच
 पीसकरौजिमवेहा॥१८॥विजयबंध॥फुनिम
 भलिके॥तामैकिके॥टीकाकादै॥अतिहित
 ॥१९॥चौपई॥अबसूधहोइवियाजिहिमोहो
 कौकतचाहनितजेहो॥जाकौरवनप्रीतन
 धरइ॥सोनारीइहटांनौकरइ॥२०॥दोहर॥गो
 वंतजोनिरक्त॥काहैतिलकनिलार॥जबटी
 वैदगन॥तबवसकयनरतार॥२१॥अंजन
 चौपई॥तगरक्वतानीसमंगवै॥तबवातीस
 पीसलगावै॥सर लंदीपमहिनेला॥व
 ती वहेतेना ज्ञायणाबंध॥आ
 नैत मतमषोपरी

रपारीयैरंचकनआंदिमैतजबदीजीये। जौमनना
 वेतारताहिवसकीजीये॥१८३॥ चूर्ण। मनसत्तये
 सकमलदल। गोरोचनअनिराम॥असिअंजन
 नैननिकरे॥निरषतमोहिनांम॥१८४॥
 लेइमधपकेपष। चाषअरुक्कवननिजे॥तगरकंजको
 मूतकाकजंघाफुनिलिजे॥एवउपधपीसएरंरुदल
 मध्ररषावे॥रविवासरजबहोइवसनमृसुकाकोत्पाके।
 एरंरुपत्रचूरणसहितवसनमध्रनिसचैधरे॥जाऊपा
 रमारैजकोऊप्रगटप्रेमतासोकरौ॥१८५॥नुकांजन॥
 षंजनलेपिंजराभैमारै॥बरषएककाकोप्रतिपारौ॥वष
 मध्रअसौदिनआहि।सातपषनिकसैसिरताहि॥१८
 दिनइष्टनआवेसोइपेवासीपिंजरमहिहोय।नैन
 षोजततिहरदै॥नैसेहाथमेळतिहगहो॥१८७॥सातपंष
 उपारिकर॥कंचनमध्रमंठाइ॥कोऊनदेखैतासको
 मुषमेळजहांजाइ॥१८८॥अस्तमंजारीआंनके॥गो
 शृतताहिषवाइ॥तिहजौमारैवमनकरि।सीअंमृ
 तलेषाउ॥१८९॥लीजैहुळकपासतै॥जोनयंत्रकरसो
 इ॥काचैदीपकभैधरे॥निजवातीकरसोइ॥१९०॥चंद्र
 इण॥आधीरैनअमावसनैननिहारीये॥अहिवात
 कोधीउदीपकमहिजारीये॥मनषषोपरीऊपरकाज
 रकीजीये॥फुनिहां॥कोऊनदेखैताहिनैनजबदी
 जीये॥१९१॥चौपई॥कदमइतकहूंतैत्पावे॥कै
 केसूकेफलमंगावे॥इतकेननिहचैलेत्पावैते
 सबनीकीवैररषावे॥पुरुइइतंतजे

सहस्रवारसो आकृतद्विजे ॥ सातडुहपदिराके
साइ ॥ जिहिदें सोअपनेवा सिहोइ ॥ १२३ ॥ अथ
मंत्र ॥ ॐ काम्यसौरं पुनगं प्रोक्त्वं माको कल्पये
स्वाहा ॥ ॥ वासुं मां ॥ ॥ केसूके प्रसू म्मि
अवे ॥ मन्त्रे च लघु वारज पधवे ॥ पदकर जो
जैजास ॥ जो नि सचे तियव सकु वै तोस ॥ १२४ ॥
अथ मंत्र ॥ ॐ वासुमा प्रहियं ॥ उनय व जतं नवा
ख मोक्त्वा स्वाहा ॥ ॥ पचनी व स करतं ॥ वउ पई क
रेके स्के कस मगहि ॥ वां म पा स धर पा न ॥ म धर
र पद म नि ताम नु वि ॥ पटि इ ह मंत्र सुजा नं ॥ १२५ ॥
पद मन को ज ब दी जीये ॥ हे त तुर त व स हि ॥ लो
चं त व तं ज य थ व र ण सु लि ॥ मंत्र व स स ब को इ ॥
१२६ ॥ अथ मंत्र ॥ कामे स्वर महिये छ एं मा क्व
स्वाहा ॥ ॐ कामे स्वर पटि प क्षे मा कार विष्ठा म हि
यं स्वाहा ॥ ॥ चित्र ती व सि कर ण ॥ स्रं पई कं ड ल
की ज र कौर स ल्या वै ॥ एक ना य फ ल मे ल पि सा वै
॥ फु नि स्त का य कर ध रै नि रा रा ॥ ज ब आवै काम
सा नि वारा ॥ १२७ ॥ वा को पी स पा न म हि रा धे ॥ वा के
व च न पा न म हि न वि ॥ हो त ही का ल दे इ न व ता हि ॥
हे त ही करै पी त नि र वा हि ॥ १२८ ॥ अथ मंत्र ॐ स्म ने
ग मा या ॥ का म दे वा य नी स्वा हा ॥ सं ष नी का सि कर ण
दो हा त ग र मू ले पी प ल प टी ॥ जे व ही सं ष नि पा इ ॥
जो जं ब क व सि अं स म स ति ॥ ते सै वं स ऊ य ना इ
॥ १२९ ॥ मंत्र ॐ महि ता त स्त्र मि नी ज हिय म ह उ

॥ हस्तनीवसकरणं ॥ चउपक्षपंषपरैवाकीति
सहतरफुनिचतुरपिसावे ॥ पठकरमंत्रतिल
नाल ॥ निरषत्रियामोहेततकाल ॥ २० ॥ अ
पंत्र ॥ उँ धरिकामदेवायस्वाहा ॥ १७ ॥ मंहाउ
लावेचरन ॥ तरुनसुरतकेअंत ॥ जबलगज
जगतमै ॥ श्रीतवटावेकंता ॥ २० ॥ चउपक्ष
अंतलेअपनोवीरज ॥ लावेनांमवांपगन
ज ॥ एमीमहिनावेजोनाह ॥ तरुणीकरैश्री
रषाह ॥ २० ॥ इतिकोकमंजरीकदिआत
तनरयुवतीवसकरणं ॥ यादसमोअध
॥ अथजोनिवर्णनि ॥ सेहयमोएकैजो
मनोमृदुवारिज एकनकीअतिसैयक
एकमकीकहुगोरसनासम एकनकीकहु
वगिगी ॥ एकनकीजलहीनविराजत
नकीनिसवैषनिहारी ॥ कोमलहोइनहोइ
लोइसूश्रीतमकोमठमोहतनारी ॥ २० ॥ हो
नारीएकविरंगमहिनासिकारूपसमांन ॥ सु
आदिताकोमिलै ॥ कामीरसिकसुजांन ॥ २० ॥
रतिरुचिउपजैनाहकौं ॥ नारीमिलैजुकोइ ॥ र
चिवटायजौरतिकरौ ॥ तोरतिरुचिअतिहोइ
२० ॥ नारीएकवरंगमहि ॥ सबनारनकौंहोत
मदनांकुसकीसिषरसम ॥ तहांमनसिजको
ता ॥ २० ॥ जांपदनांकुसकीसिषा ॥ प्रगटपुरष
बिहा ॥ लोकाकेउतहितहो ॥ जांनिगुप्ततिरनेद

॥२०७॥ रगत पर तजो जो निते ॥ बीरज प्रवे जुना
हि ॥ जव लगनिस चै जो निते ॥ गर नव धैत हिमा

॥२०८॥ मदनो क सजा पुरष को ॥ तासौ लगन

॥ प्रवे जवे गहिका मनी ॥ जागति ही अऊ लाश

॥२०९॥ मदनो क सजो जो जगै ॥ तिमो आवटै अने ग

धटे द प्रपकं प्रको ॥ निटे तरुनि उषतं न ॥२१०॥ म

नां क सजा पुरष को ॥ नागे तासो जाय ॥ चार जो

जोरतिकरौ ॥ तारिन नै क अथाय ॥२११॥ पद मनी

निवर्णन ॥ अति वर कुनको मल विमल ॥ होइ

नता परवाला ॥ प्रवे जे गम ध गंध सम ॥ पद नि

चि च निहाला ॥२१२॥ संव नीयो निवर्णन सोरवा

ब्रजत होत जाला ॥ प्रवे सुख - - गंध समा ॥ प्रवे

हो जाला ॥ अति क गंध सम नि मदन ॥२१३॥ ह

तनीयो निवर्णन ॥ कठिन तिष्ठ परिबाल जहो ॥

नग महिषी पुरपीन ॥ प्रवे जग म ध गंध

॥ हस्त नि अति रस लीन ॥२१४॥ प्रवे वे गरति

रं च करि ॥ पद मनि चि च निवाला ॥ एक संमनि

अरु हसतनी ॥ प्रवे न हो जाला ॥२१५॥ इति

यो द राम धर ॥ अथ मदनो क सवर्णना ॥ दुहा

मदनो क सजा पुरष को ॥ आगे हो शवि साला ॥

ठकवार अतिको वनी ॥ प्रवे स्फुरत उजाला ॥

१६॥ जाको समम अति हि लस्यु ॥ नहि टपतै वा

द नार ॥ अति हो शवि न चारण ॥ ली जे चउ

वार ॥ २१ ॥ काको फलरक गोर बड ॥ नहि दीरघन
 धु होइ ॥ तास मउतमा और नहि ॥ जानत च
 जकोइ ॥ २१ ॥ मदनोऊ सकौ सिरफनरा ॥ होइ
 फजरत वारा ॥ इवैवेग नग परसतै ॥ टपतनपा
 मै नारि ॥ २२ ॥ इति चतुरदश मधु ॥ अथ अ
 गवर्णन ॥ ७ ॥ काकजंग उर उर जकटा ॥ पंच
 गनषदांन ॥ अधरकपोलन बिंबसहित ॥ तीना
 षं मनजांन ॥ २२ ॥ अधरकपोलन सीसउरा ॥ उ
 जपांच असनैग ॥ सात अंग मरदन करछा ॥
 नऊ बडु वस्त्रिमेन ॥ २३ ॥ इति पंचदस मधु ॥
 उतपतिकांम कलोलके ॥ फिनफुरसिक सबके
 एविलास तब हीवतै ॥ त्रियविचत्रजव होया ॥ २४ ॥
 होयरतिकजि संग निस ॥ सुनौ चाहिस
 मुखे ॥ जो बढिकरै तौ बल द्यये ॥ इयविनत्रिय
 हिस्काष ॥ २५ ॥ काकजंघ उर उर जकंठि ॥ प
 च अंग नाषदांत ॥ अधरकपोल कुच सी
 रा ॥ एवं विनसहि चान ॥ २६ ॥ मस्यल मुक्
 लपरि ॥ और हेठके होठ ॥ एषं मनजांनै चउर
 नै कनजांनै गोठ ॥ २७ ॥ सेऊ बरगन ॥ विमल
 और परमल विमल ॥ विमल ऊस मफवास ॥ ऊ
 स म विमल कादंबरी ॥ विमल सेजकी वासा ॥ २८ ॥
 पांतल वंगइलाइची ॥ जाति फल घनसार ॥ जाव
 ती संगमेलिके ॥ इहविध सेऊ संवारि ॥ २९ ॥ नाग

भावकरकरिस्तीर उरुउत्तज्जोत्रवि सतिकरज्जोत्र
 उसाइ काकसापइमउरी
 रपरमलवसनततथ असपरमलवकुलाया बदन
 पांनराजतध्रधरासिजहिबैवेआया॥२२८॥तबम
 प्रनिगजगामती॥नवसतसाजिष्टगारमपासमु
 वैवहिआयके॥रूपअपार२॥२२९॥संगंलावे
 अतिविमलवैररुवासतीविमलसेरुविवाध
 ऊहउस्पचेदनचासपरमल धरेपांनमंगाइ
 सालहष्टगारसंवारिस्कंदरगवनस्तनगाम
 राल॥वैवेस्फसनमुषआयसासिमुषरूपपरा
 परसाल॥२३॥अध्यालंमूत्रांरिगंनकेयो
 सप्तसुर॥स्योआलिगनिपांच॥आसनकेसि
 रताजइहि॥आलिगनरतिराचा२३॥तरुण
 कंधकरिवामधरिगवेवावातिपतिगद्य पांन
 ववावतिधीतकरिगआलिगनआमोदग२३
 सुदितआनिगनातरुणिजंघपतिजेधमहि
 मरुपावतपीयजास॥इहआलिगनमुदतकति
 उपजतपरमकुलासा॥२३॥सिमआलिगनाप
 कटिलीनेएकपग॥दितियजंघपरजांनापिय
 परमलनावाहिलुउरगधिमआलिगतमांना२३
 धानिसंगनिगनापतिकटिलपटैविबिचरना
 नरिपरसपरअंक॥उरजगहसखुंबनबदन॥
 नामआनंदनिवांका॥२३५॥रुचिआलिगनीति
 वैवैपतिजंघपरा॥नांमकंधकरवाम॥मुक्तव
 सननियमीकरौआलिगतसचिनाम॥२३६

प्रथमचउरजो कामिनी ॥ पतिको आसनदित
 अतिअनंदमनुउपजे ॥ वढै विवितनहिता ॥ २७ ॥
 जोगासना ॥ तियपोढके पालषीसिरुपरै ॥
 जगजंघडककरअधुरै ॥ पतिबैठनुजागहि
 केनकरै ॥ कविआसनजोगविचारकरै ॥ २८ ॥
 नुजऊपरनामकेपाउधरै ॥ पियबैठ
 नुजागहिकेनकरै ॥ रतिनामकह्यैइहिआसन
 को ॥ रतिधीतविनोदविकासनको ॥ २९ ॥ मदनो
 दितआसन ॥ कठिऊपरनारिकेपाउधरै ॥ पिय
 बैठगहैकचकेनकरै ॥ मदनोदितआसननाम
 यहै ॥ रतिहोतविनासअनंदकहै ॥ ३० ॥ इडास
 नचंद्राश्रगा ॥ कामणिकेकदलीदलदोऊनुजधा
 कै ॥ कामीकरै किलोअग्रबैठारिकै ॥ गहैपरस
 परअंककामसुखसुखमानइ ॥ फुनिहां ॥ ३१ ॥
 मइहआसनजानसुजानइ ॥ ३२ ॥ लालआसन
 सुदरकेपगलेइडककरिधारिकै ॥ पियपावेआ
 नंदअग्रबैठारिकै ॥ गहैपरसपरअंककरैरतिका
 मिनी ॥ फुनिहां ॥ लालसआसननामलहैसुखन
 मिनी ॥ ३३ ॥ विपरीतआ ॥ पिउपसारिकैहेठपरै ॥
 चढिनामिनीकामकिलोकरै ॥ विपरीतहिना
 मनुआसनको ॥ मदनोदितकामविनासनको ॥
 ३४ ॥ अदुजआ ॥ पियपोढकेनारिउरोजगहै ॥ तस
 गीपतिऊपरबैठरहै ॥ कामनीकामकिलोकरै

कविआसनचंद्रजनामधरो॥२४॥रतिपामआस
 ननंद्रा५॥कामीकरपटकामत्रियाकीजंघमे॥का
 मणिकेदोऊपाउरुक्तंनितंबमे॥सिऊगहेदोऊ
 पाउकरैरतिमोषता॥५॥निहोआसनरुकोनामय
 हेरतिपोषता॥२४५॥हितआसनचौपरी॥कामनि
 पोटेपाउपसारि॥पीउपगउलटगहेनिजनारा॥कंत
 गहेकामनिकेपाय॥हितआसनवरनैगुनराया॥२४
 ६॥मृगासन॥वनितापसुकीसमऊयरहे॥पिय
 ऊपरपानउरोजगहे॥खैमुषतितुवनकेलकरे
 मृगआसनरूपअनुपधरो॥२४६॥परस्परआस
 न॥आरुचरणपाठेकरहे॥७६२॥चरणपरसपर
 गहे॥दपतिकेककरैअनिराम॥आसनजानपरस
 परनामा॥२४७॥मृणालआसन॥यनलागरहेनि
 जकामनुथाटो॥कामनिगहेआनिगनगाटो॥नि
 पनचायपियकेनुंमराहोकीमृणालआसनरुह
 केहो॥२४८॥तमालआसन॥दिहो॥पि
 टिगहे॥दियेअकनीबाल॥कामीकामनिजंघ
 आसनयहीतमाल॥२४९॥सुमपलवआपि
 जंघउनेपकरे॥करउलतकंतकेसीसधरे॥
 बितगहेऊककेलठवे॥रुमपध्वव
 ॥२५०॥महाबलआसन॥नामानिकेदोऊपा
 जुगधारिके॥कामीकरैकिलालरुपाउपसारि
 पायनकोअतिहीबलनिहचैआनीये॥१

आसन ऐसो जानिये ॥२५३॥ स्फुरति आस
यके चरण कंठ पर धारै ॥ कटिकर गृह क्रीडानि
सुरत अंत आसन को नाम ॥ याही तै प्रा वै त्रिय
॥२५४॥ एषोडस आसन करि आवै ॥ तब कामनि
प्रथम वा वै ॥ जतन जु करहि ए हवर नारि ॥ फुति
ले ॥ उन्ने कर वारा ॥२५५॥ होहरा ॥ पिय धो वै तातै
क ॥ तरुणी सीतल तोय ॥ इऊ दट कौ दट हीर
बहु संकोचन होय ॥२५६॥ नगन जु सो वै नारि सं
घटै जु अंग मनोज ॥ जो वसत न संग पो टई ॥ वा
मन मथ चोज ॥२५७॥ इति स्फुरति ^{आसन} ॥ रहे रैन
दो इघटि ॥ तिमर होइ कबु मंद ॥ सावत ही आस
करै ॥ आर सति त आनद ॥२५८॥ अथ उदित अ
तरुनी को है पीठद ॥ पिय पोठैर तिथान ॥ कटिक
कामनिके गहै ॥ उदित स आसन नाम ॥२५९॥ र
कोच आसन तरुणी सेरुपा इ प सारि परै ॥ पियत
पर वैठ कि लोचन करै ॥ जुग पीन पयो धर पांन गहै ॥
इहनां म अनंद संकोच कहै ॥२६०॥ सिधु ल अ
न ॥ तिय दक्षणा पा व प सारि परै ॥ इसरौ पग पि
के कंध धरै ॥ पति पांन गहै ऊच के ल म चै ॥ सि
रलासन स्फुर अनंद र चै ॥२६१॥ गिंडुक आसन ॥
॥ जातिक बंध ॥ तरुणि वरण धर लुजनि पर सपर
क न रिजे ॥ उपवरहन तिय हेठ मुख करि केल करि
॥ कामनि उपर कंत सु क्रीडा कीजिये ॥ गिंडुक अ

सन अतं दस्र वतस्फ निती जिये ॥२६२॥ एपां चो आस
 न करौ ॥ तब प्रावै विबिकां मारो मरस्फ म ऊपजे ॥ रति
 हित मोने नां ॥ २६३ ॥ ठं ८ पथरी ॥ आमो द सु दिते
 उनि प्रे मे जां न ॥ निसंगं सु च हि आनं ८ बंधानां ॥
 आविं गन पांच क सुरतरष्य ॥ आनं ८ वि बिर सं प्र
 म चष्य ॥ २६४ ॥ ठ पय ॥ प्रथम जे गे रं ते जां न ब ऊ रि
 म द नो दिते मां नो ॥ जा नि ई डं ला ले स सु प द वि पर
 न व धां नो ॥ फु नि पा ठे अं बु ऊ अ ध रं ति पा र्थ त कि
 के ॥ हित आ से नं हें गे और पर से पर ॥ जी य ध रि के ॥
 जा नि त मां नं मृ नो ल ॥ जा ति सु र्ध प ल व सुं प्र हें बिल हि ॥
 सर ते अं तं आ से न क हिय ए षो ड स च्या स न न व हि ॥
 ॥ २६५ ॥ ठि ॥ इ पार सि उ दित सं को च क हि ॥ सि ध
 ल नु गि ड क जां न ॥ पांच ऊ आ स न वि ति य र ति ॥ ज
 नं ऊ ने ८ स्फ जां न ॥ २६६ ॥ प्र षो म स ए पं च क हि ॥ न ए
 सं क ल इ क वी स म्बु लि ला व न स्फ कर न ॥ जा व नि
 र ति को ई स ॥ २६७ ॥ चौरा सी आ स न स क ल ॥ क हे को क
 स्फ कं ॥ ता म हि ते स व अ ति क वि न ॥ क हि ये क
 अ नं ८ ॥ २६८ ॥ सो रा ॥ ए आ स न इ क वी स ॥ हर य
 उ पा व न ड ष हर न ॥ जा व नि र ति को ई स ॥ किल कर न
 को अ ति स ग मा ॥ २६९ ॥ प द म नी आ स नं ल धु
 चो प ॥ म द नो दित स ऊ च क हि नो ल ॥ मा ने स्फ
 प द म नी बाल ॥ ती न वि से ष से ष सा मां नो ॥ क हि अ
 नं ८ ए ह जिय जां न ॥ २७० ॥ चि व र्णी अ

नोदितअंबुजआरस॥फुनिमृणालविपरी...
लालस॥एषटचित्रणिस्रुषदायक॥जानैचउ
कोकरसनायक॥२७०॥संघनीचित्रणीआसन॥
७६॥संघनिगिंडकजोगरति॥होइस्फुटप्रिवषा
न॥स्फुरतअंतरितहस्तिनी॥प्रगटमहाबलजान
॥२७१॥

॥त्रियकरतविपरीतरति॥

अस्थितनुबतजान॥रचैजुआसनकोकमहि॥
बनिजवारणवान॥२७२॥

॥मृगआसन

आरसअवरा॥उरजआसनजान॥त्रिजगआस
नतीवहो॥कहैसुकोकवषान॥२७३॥रतिआसत

ऊप॥मदनेदितअरुजोगवषान॥गिंडकासि
यलमहाबलजान॥स्फुपध्वरतिसकोच॥नव

रतिजानआनिजियलोच॥२७४॥विपरीतआस
न॥७६॥हितअंबुजरतिपोषता॥अरुविपरी

तअनंदा॥एआरांविपरीतरति॥कहैकोकस्फु
कंदा॥२७५॥अस्थितांविध॥अस्थितइंद्रपरस

परहि॥लालसकरिजियजानि॥एकतमाल
मृणाललहि॥विक्रुस्थितप्रयवान॥२७६॥ना

रीआसन॥अंबुजरितपोषतविपरीत॥लालस
हितजीयधरिप्रीत॥आसनपंचतरुणिहितकर

कोकरीतइहविधउचरै॥२७७॥इंपतिरुषआस
न॥आसनजासपरसपरनाम॥ताकोकरतपुरष

अरुनाम॥सिषपचदसआसनरहै॥त्रियाडर

मकरनकोकहे॥२०॥सकनडरसिकजनश्रवणरु
 नि॥कोकरीतसफरास॥चाहतचउरसरोचके॥
 करतमूढअतिहासा॥२०॥बेदपधरी॥२०॥
 पथमअमरावतिकृतोकाका॥नहिजानतकोक
 मृतलोक॥इककृतावासादीमनेसा॥तिहप्रग
 टकयोकीडाविसेसा॥२०॥तापाळिजो कविअसि
 ष॥तिहश्चाकावकरि२विसेष॥कोमहिपदीप
 अस्पचवान॥१॥निरतिरहस्सजानेसुजाना॥२॥
 उरमंनसिबच्यादिअनंग॥आरतिरंजनस
 मरतिदंग॥पटसकलकवीकरि२विचार॥वरमे
 अनंदकविकोकसारा॥२०॥इहा॥सराक्षिप
 सोरहसरसा॥रचेजुवजुविषव०॥पठतरतिरंग
 तवा॥विवितहितअनंद॥२०॥इतिश्रीकोक
 मंजरीकविअनंदकृतसौडसषडसमापतं॥
 संवतर००५राजेष्टवदि६ वासरेस्त्रियत
 सि॥बुधमंजरायडरमधे॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥
 ॥बिनालपचीसी॥इहा॥पाजेजिवैपैमैचलती
 इहैवैसेरीनीसरती॥जेमवचनकहिडरपहसा
 वै॥औरबिनालकहाडोलवजवै॥२॥ उरमध
 कावैपैमैचलती॥फेचोप्रहिरापेमदमती॥चै
 हदैऊनीपांनमंगवै॥आ०॥२॥

रहेसिणगारी ॥ जावहिपरिघरिरातअंधारी ॥
 पांतहीपहिरहयाईआवे ॥ ओ० ॥ ३ ॥ हासीक
 रेबैतचौबारे ॥ थाटीदेषेऊपरवाडे ॥ काकरी
 प्रारसंकेतजणावे ॥ ओ० ॥ ४ ॥ विररऊचषांच
 बांधे ॥ कांमीदेषमयणसरसांधे ॥ श्रुषदेषीते
 नयणतचावे ॥ ओ० ॥ ५ ॥ आपकरतऊचम
 रदननारी ॥ षांचैचीरनिसासाफारी ॥ बांकेनय
 णांतयणमिलावे ॥ ओ० ॥ ६ ॥ जानबुझमिसनि
 तकीबोले ॥ सरमवातसबहीसांषोले ॥ वाटेपु
 रषांपांतचवावे ॥ ओ० ॥ ७ ॥ कंदोइनधोबत
 कूनारी ॥ नायनबीपनऔरफनारी ॥ विरर
 उनकेघरिजावे ॥ ओ० ॥ ८ ॥ म्हगहिम्हउर
 नदेती ॥ घरिरफिरिउदंगतिलेती ॥ सन
 मुषदेषीकाषवजावे ॥ ओ० ॥ ९ ॥ बहुतरहेम
 ताकेजाघर ॥ अरुतियजातडुपुहेरबाहिर ॥
 जुवादेषकैषेलमचावे ॥ ओ० ॥ १० ॥ दिषिरनेकरे
 षंधारा ॥ दिषलावेसबअंगउधारा ॥ गहिरसब
 दकहिपायलठमकावे ॥ ओ० ॥ ११ ॥ पुरषांविच
 जायषलेसारी ॥ दातांकरिफेडेसापारी ॥ षल
 वेरीसांहेतेहवधावे ॥ ओ० ॥ १२ ॥ हसिरमीठाव
 तांबोले ॥ विररबाजारहिकोले ॥ जातांपुरषांने

वतलावे ॥ ओ॥ १३ ॥ मारगचनतीपाठेरे ॥ पु
 ह्मचकोडीचैडोफेर ॥ बांहुजीकरकाषटि
 पावै ॥ ओ॥ १४ ॥ पहिरफुनेनसमारिपाट ॥ ग
 थिसीसुहृपकीआटी ॥ दिनेकीदांतकवाडि
 िरावे ॥ ओ॥ १५ ॥ राजपथनीकनतीवान
 ॥ तरुणपुरवसुदेतीतान ॥ नंगरासेतीतान
 जावे ॥ ओ॥ १६ ॥ तरुणदिवकैकाभजन
 वि ॥ मोडअंगबहुअमानसआवे ॥ पहिरणटी
 लोकशिटिमजावे ॥ ओ॥ १७ ॥ धिडकीवाटन
 गाईसोवे ॥ परधरवैतीपतिहिविगावे ॥ पानि
 सीबहुतजगावे ॥ ओ॥ १८ ॥ आपटीअध
 रसणसुचापे ॥ वाररमुपअचरजापे ॥ धका
 धुवतेअधिकसुहवे ॥ ओ॥ १९ ॥ जाटक
 सिफविडा ॥ दीवाधरीयावार ॥ औरकहा
 कहुयकहे ॥ आऊवैविमुहमार ॥ २० ॥ पाठे
 जोवेमुपहसे ॥ बोलावीदेगाल ॥ वमकै २ पग
 ठवे ॥ तोसाचीबिना ॥ २१ ॥ नीलधुजावेपे
 नैबनती ॥ उरहापरहावेकादिसजोती ॥ आथे
 पाथेचीरखावे ॥ ओ॥ २२ ॥ नीचोतोवेवां
 हलजावे ॥ धिनगरकरजिहरवजावे ॥ ओ॥
 २३ ॥ पगटेकरीबिना ॥ पचीसी ॥ वहु

हे प्रणवची सी ॥ उन्नै जनक निजला जगमा वि
॥ ॐ ॥ ० ॥ २ ॥ ३ ॥ क व ल ॥ इ ह दित सेरी फिर पी वै म
गि दषत है उसा सनास हाथला इगा लके ॥ नि
तजा इपी नक मुलावत बाजार नमै हांसी करै
नरता सुक हर कुला सके ॥ त्रिगत के सरसंधे
कांमी दष इरन सुनु हक नचायके दिषाय ज
तना लके ॥ वे लनके कनां घां न वस्तु के बिन
यलेत कहै नै मल बन है बिना लके ॥ २ ॥ इति ॥

